चन्दामामा
दिसम्बर १९९३

जवाब:
१. फूलों की पंखुड़ियां ज्यादा हैं.
२. तोते की चोंच खुली है.
३. तोते की गर्दन पर लाल पट्टी है.
४. लड़की की आंखें खुली हैं.
५. लड़की मुस्करा रही है.
६. फ्रॉक पर सितारे बने हैं.
७. लड़की के कंगन पर हीरे जड़े हैं.
८. कुत्ते की जीभ बाहर है.
९. प्लेट पर पारले का नाम लिखा है.
१०. प्लेट में मैंगोबाइट रखी हैं.

प्राण
श्रीमतीजी और तोहफा
अग्निपुत्र अभय और ब्लैक थंडर
मुफ्त!
अग्निपुत्र अभय और ब्लैक थंडर के साथ 1994 की रंगीन डायरी
भारत में सर्वाधिक बिकने वाले कॉमिक्स-डायमण्ड कॉमिक्स
मुफ्त! स्टिकर इस कॉमिक के साथ
चाचा भतीजा और नागिन का इंतकाम
मुफ्त! स्टिकर इस कॉमिक के साथ
फौलादी सिंह और झणाक्षक
मुफ्त! स्टिकर इस कॉमिक के साथ
लम्बू मोटू और क्लायमैक्स की चोरी
मुफ्त! स्टिकर इस कॉमिक के साथ
प्राण
दाबू और देव
पलटू और चोर कौन
मुफ्त! स्टिकर इस कॉमिक के साथ
राजन इकबाल और चलता फिरता कब्रिस्तान
महाबली शाका और मैग्नेटो
स्टिकर फ्री!
ताऊजी और भगोड़ी आत्मा
मुफ्त! स्टिकर इस कॉमिक के साथ
स्टिकर फ्री!
चाचा भतीजा और इंतकाम का अंजाम
मुफ्त! स्टिकर इस कॉमिक के साथ
प्राण
रमन और रामलीला
मुफ्त! स्टिकर इस कॉमिक के साथ
डायमण्ड कामिक्स डाइजेस्ट
मैण्ड्रेक-15
जेम्स बाण्ड-15
मुफ्त! स्टिकर इस कॉमिक के साथ
मुफ्त! स्टिकर इस कॉमिक के साथ
मुफ्त! स्टिकर इस कॉमिक के साथ
डायमण्ड कामिक्स प्रा. लि. 2715, दरियागंज, नई दिल्ली-110002
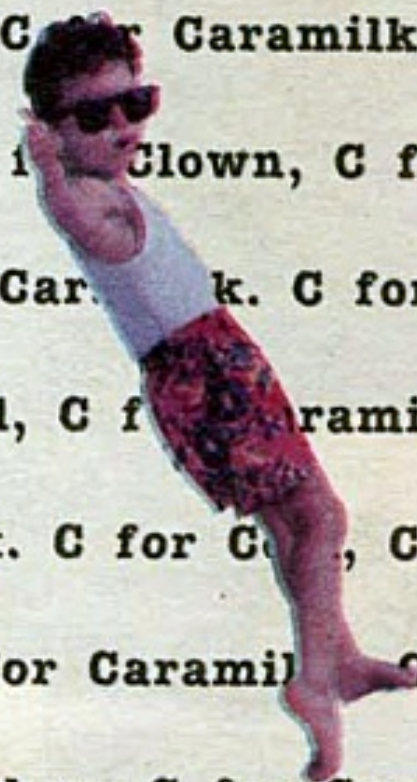
एको से बनाइए सुंदर मुखौटे!
एको स्केच से रंगबिरंगे मुखौटे न केवल बनाना आसान... बल्कि ये है मौज-मस्ती का सामान!
एको – अनेक सुंदर रंगों में १२, २४ और ३० के पैक में उपलब्ध.
और एको की सबसे बड़ी खूबी, ये हैं वॉटर-बेस रंग और अविषैले भी यानी
इनका इस्तेमाल भी नन्हें-मुन्नों के लिए पूरी तरह सुरक्षित है!
और फिर जब मम्मी देखेंगी आपका कमाल... तो खुशी से होगा बुरा हाल!
एको – मौज़मस्ती का बेहिसाब हंगामा!
हजारों इनाम जीतो!
मुफ्त! कलरिंग बुक हर पैक के साथ!
Ekco®
आपकी कला की सुंदर अभिव्यक्ति.

चन्दामामा

संस्थापक : 'चक्रपाणी'

संचालक : नागिरेड्डी

समस्त धर्म-एक प्रबोधन

"दूसरों के साथ हमारा जैसा व्यवहार होता है, वैसा ही व्यवहार दूसरों का भी हमारे साथ हो" संसार के धर्मों का जो द्वितीय संसद चिकागो में सितंबर में संपन्न हुआ, उसका यह प्रबोधन रहा । ठीक सौ साल पहले इसका प्रथम संसद भी इसी स्थल पर हुआ । इस अद्वितीय संसद का समावेश भारत के प्रतिनिधि की उपस्थिति से चिरस्मरणीय बना । वे प्रतिनिधि थे स्वामी विवेकानंद ।

विश्व के प्रधान धर्मों में से १२५ प्रतिनिधियों ने इसमें भाग लिया । इसमें हिन्दू, बौद्ध, जैन, ईसाई, इस्लाम, सिक्ख, तथा जोरोस्ट्रिज़म धर्मों का प्रतिनिधित्व किया गया । इन्होने द्वितीय संसद में उपस्थित होकर विश्व का नैतिक सिद्धांत घोषित किया तथा हस्ताक्षर भी किया । इसे हम "सुवर्ण आदेश" कह सकते हैं । उल्लिखित प्रबोधन कार्य-रूप में परिणित करने की प्रार्थना सब धर्मों के अनुयायियों से की गयी ।

यह घोषणा पारस्परिक वाद-विवादों के परिष्कार का मार्ग सुझाती है, साथ ही इसपर ज़ोर देती है कि अहिंसात्मक पद्धतियाँ अपनायी जाएँ, प्रकृति का आदर हो, तथा स्त्री-पुरुषों में समानता हो । नौ पृष्ठों के इस प्रलेख में एक भी बार 'भगवान' का नाम लिया नहीं गया । जिन्होने इस प्रलेख को प्रारूप दिया, शायद उनका यह विचार था कि 'भगवान' का नाम लेने से ऐसी विचारधारा के लोगों की भावनाओं को ठेस पहुँचा रहे हैं, , जो भगवान के अस्तित्व को स्वीकार नहीं करते ।

विवेकानंद का दर्शन था-मानवता की एकता । यह घोषणा उस दर्शन से निकट साम्य रखती है । दलाई लामा ने इस बात पर ज़ोर दिया कि उक्त नैतिक नियम संसार की समस्याओं को सुलझाने में सहायता पहुँचा सकता है । विश्व-शांति की स्थापना में इसका अत्यधिक प्रभाव होगा ।

दो हज़ार साल पहले ईसा ने कहा "जिस प्रकार दूसरों से लेने की आकांक्षा तुम रखते हो उसी प्रकार तुम दूसरों को भी दो ।" शब्द और भाषा अलग हैं, परंतु अर्थ एक ही है । वर्तमान धार्मिक नेताओं को, इस साधारण बात का हमें स्मरण दिलाना पड़ता है और सचमुच यह चिंता का विषय है ।

वर्ष : ४६ | दिसंबर १९९३ | अंक : ४

एक प्रति : रु. ४/- | वार्षिक चन्दा : रु. ४८/-

समाचार-विशेषताएँ

भयंकर भूकंप

इस वर्ष सितंबर १९ को गणेश चतुर्थी थी। दस दिनों के उपरांत गणेश मूर्तियों का निमज्जन हुआ। बुहत ही बड़े आनंद तथा उत्साह के साथ देश भर में निमज्जन का यह कार्यक्रम संपूर्ण हुआ। महाराष्ट्र में गणेश चतुर्थी व निमज्जन का उत्सव अत्यधिक मात्रा में संपन्न होता है।

लाटूर जिला मराठवाडे का एक क्षेत्र है। सितंबर २९ को खिल्लारी गाँव की जनता ने गणेश की मूर्तियों का निमज्जन करने के लिए एक बड़ी जुलूस निकाली। "गणपति बाबा मोरया" कहते हुए, मुक्त कंठ से गीत गाते हुए अपने प्रिय भगवान गणेश के आशीर्वाद की प्रार्थना करते हुए वे निमज्जन के लिए गये। वे अपने गीतों द्वारा गणेश को आह्वान दे रहे थे 'गणेश, अगले वर्ष पुनः आना'।

देरी से वे रात को अपने-अपने घर पहुँचे। वे सब बहुत ही थके हुए थे, इसलिए शीघ्र ही निद्रा की गोद में चले गये। उनमें से कुछ लोग ताश खेलते हुए, मनोरंजन के कार्यक्रमों में भाग लेते हुए शेष रात बिताने लगे। भाग्यवश आज उनमें से बहुत से लोग सुरक्षित हैं। ऐसे लोग जब इस दुखद घटना का स्मरण करते हैं तो उनकी आँखों में आँसू आ जाते है, रो पड़ते हैं। मराठवाडा के पचास गाँव और दस शहरों में भूकंप बड़े विस्तृत रूप में हुआ। कुछ ही क्षणों में सब कुछ ध्वंस हो गया। यह प्राकृतिक प्रकोप ठीक रात के चार के दस मिनिट पहले हुआ।

विंध्य के दक्षिणी भाग के अनेकों राज्यों में भूकंप महसूस किया गया। इसकी रिक्टर स्तर की व्यापकता शक्तिशाली (६.५) है। इसके बारे मे कुछ विशेषज्ञों का अभिप्राय है कि इन राज्यों में हुआ भूकंप बहुत ही भयानक तो नहीं है, परंतु अवश्य ही इससे नष्ट पहुँचा है। परंतु उन्होने बताया कि हाल ही में भारत में जो भूकंप हुए, उनमें यह अति नष्टदायक सिद्ध हुआ है। प्रारंभ में अनुमान लगाया गया था कि मृतकों की संख्या बीस हज़ार से तीस हज़ार तक की होगी और एक लाख से अधिक लोग घायल हुए होंगे। पूरे क्षेत्र में एक भी घर ऐसा नहीं होगा जो या तो धराशायी नहीं हुआ हो अथवा जिसे नष्ट नहीं

पहुँचा हो । यहाँ के घरों की दीवारें मिट्टी से बनी हुई हैं और छत खपरैलों से ढ़का हुआ है । एक रिपोर्ट के अनुसार पूरा मंदिर गिर गया है, परंतु गणेश की कोई हानि नहीं हुई । बह जैसी की तैसी है ।

दिसंबर, १९६७ में महाराष्ट्र के कोयना बांध के आसपास भूकंप हुआ । दो सौ से कम लोग इस भूकंप में मरे । अक्टोबर, १९९१ में उत्तर प्रदेश के उत्तरकाशी में भूकंप हुआ (६.१) । ८०,००० हज़ार लोगों को इससे क्षति पहुँची ।इनमें से दो हज़ार लोगों की जानें गयीं । बताया गया है कि पिछले साल खिल्लारी में मंद भूचाल हुआ । यह भूचाल वहाँ कम से कम १२५ बार हुआ । परंतु तब भी इस क्षेत्र को भूकंप-ग्रस्त माना नहीं गया । लेकिन सितंबर ३०, को जो भूकंप हुआ, उसका अधिकेंद्र खिल्लारी रहा ।

व्यक्तिगत तथा सामूहिक रूप से बहुत से व्यक्ति व सेवा-संस्थाएँ उस स्थल पर पहुँचीं । उन्होने अनेकों लोगों को बचाया और कचरों में से जीवित प्राणियों को बाहर निकाला । सरकारी शाखाएँ भी उनके बचाव और उनके राहत के कार्यों में तीव्र गति से जुट गयीं । उन्होंने अन्न, तंबू, कपड़े और दवाएँ पहुँचायीं । साथ ही धन की भी सहायता की । भारत एकसूत्र में बंधकर इन पीड़ित लोगों की मदद के लिए आगे बढ़ा । संसार के विभिन्न भागों से भी इन दुखी लोगों को सहायता पहुँचायी गयी और पहुँचायी जा रही है । उन्होंने भी इन्हें दवाएँ, कपड़े आदि सब प्रकार की आवश्यक सामग्री भेजी । भारत की इस दुखद घटना से वे भी विचलित हुए और जिससे यह विश्वास होता है "वसुधैव कुटुंबकम" ।

भूकंपों के बारे में कुछ वैज्ञानिक सिद्धांत हैं । जैसे कुछ प्राकृतिक प्रकोपों का अनुमान लगाया नहीं जा सकता, वैसे ही भूकंप के बारे में भी अनुमान संभव नहीं । फिर भी एक साधारण सिद्धांत है । जब भूमि के अंदर पानी घट जाता है, तब खोखलेपन की सृष्टि होती है, जिससे भूमि फटने लगती है । मानव पानी के लिए ज़मीन गहरा खोदता है । बिना कुछ सोचे-विचारे पेड़ काटता है । वह भुला देता है कि पेड़ों की जड़ें भूमि को जुड़ी रखती हैं । ऐसा करने पर अगर भूमाता हम से क्रोधित हो जाए तो आश्चर्य क्यों हो?

चार्लेस फ्रान्सिस रिक्टर (१९००-१९८५) अमेरीका के भूकंपमापी थे । उन्होंने एक मापदंड का आविष्कार किया (१-१० तक) जिससे भूकंपों के द्वारा उत्पन्न तरंगों की विशालता की नाप हो सकती है । इससे पहले मेर्कल्लि मापदंड (इटालियन भूकंप के वैज्ञानिक ग्लप्पि मेकल्लि के नाम पर इसका नाम पड़ा) का उपयोग भूकंपों की तीव्रता को मापने के काम में लाया जाता था ।

मुख्य भूकंप

भारत

अक्टोबर, ११,१७३७-कलकत्ता- ३,००,००० से अधिक लोग मरे ।
जनवरी, १५, १९३४-भारत और नेपाल की सरहद पर (८.४) मृतकों की संख्या १०,०००
मई, ३१, १९३५—क्वेट्टा (पाकिस्तान) (७.५) मृतकों की संख्या, ३०,०००
जून, २६, १९४१– अंडमान (८.१)
अगस्त, १५, १९५०-असाम (८.५)

संसार में

पूर्वी मेडिटेरियन में जुलाई १२०१ में संसार का सबसे बड़ा भूकंप हुआ,जिसमें १,१००,००० लोग मरे ।
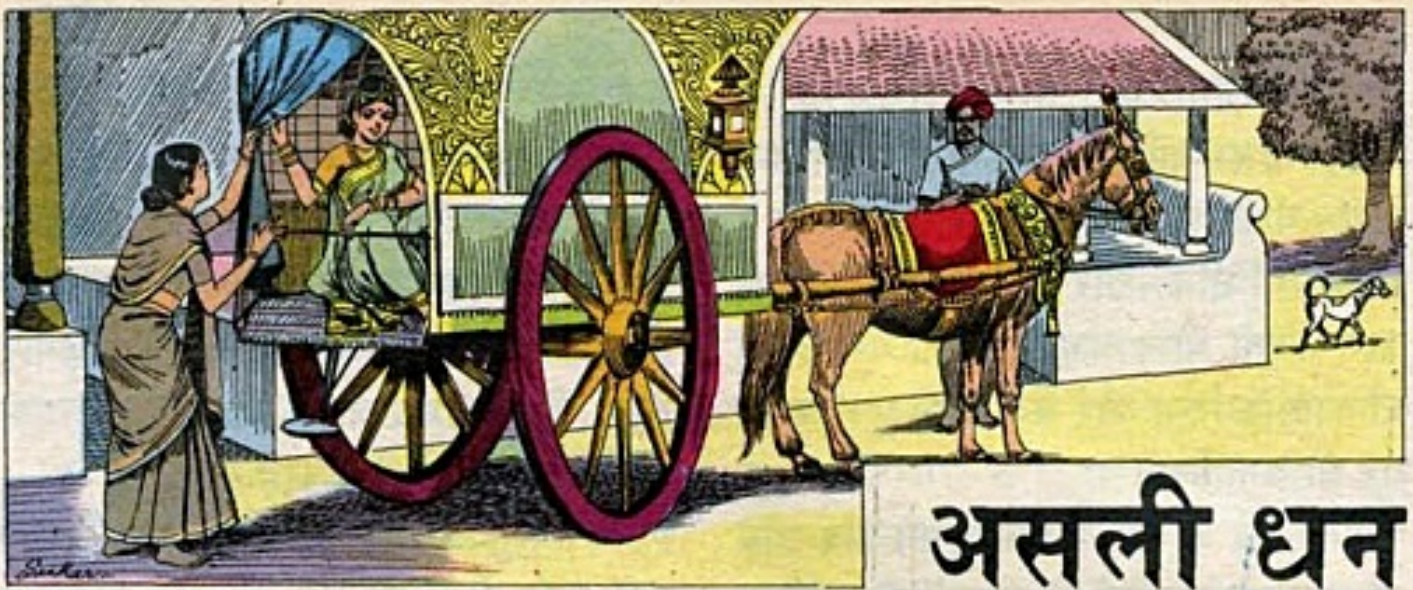
असली धन

रामपूर में गंगाधर एक छोटा-सा व्यापारी है। उसकी पत्नी प्रसव के लिए मायके गयी हुई थी। उसे और नवजात शिशु को देखकर वह शाम को घर लौटा। दूर से उसने देखा कि उसके घर के सामने एक घोड़ा–गाड़ी रुकी हुई थी। इसपर उसे बहुत ही ताज्जुब हुआ। उस गाड़ी में रेशमी परदे लगे हुए थे। उसकी माँ अन्नपूर्णा गाड़ी तक साथ आयी और मेहमान को बिदा किया।

गंगाधर के घर आते–आते गाड़ी दूर जा चुकी थी। जैसे ही माँ ने बेटे को देखा तो पूछा "बहू की तबीयत ठीक है ना? बच्चा देखने में कैसा है?"

"सब मज़े में हैं। लगता है, कोई अमीर हमारे घर आये हैं। गाड़ी में रेशमी परदे लगे हुए हैं। वे कौन हैं?" गंगाधर के स्वर में उत्सुकता भरी हुई थी।

बेटे के इस सवाल से अन्नपूर्णा चौंक पड़ी। क्षण भर में उसने अपने को संभाला और कहा "वे? वे कोई दो चार आदमी नहीं हैं। एक ही औरत है। मेरा कुशल–मंगल जानने आयी थी। मेरे बचपन की सहेली है।"

"तुमने तो आज तक मुझसे कभी भी ज़िक्र भी नहीं किया कि तुम्हारी, एक अमीर सहेली भी है" गंगाधर ने आश्चर्य प्रकट करते हुए कहा।

"एक ज़माने में वे भी मध्यवर्ग के ही थे। क्रमशः भाग्य ने उनका साथ दिया और वे लखपति बन गये। तुम्हारे पिताजी की मौत के बाद हमें भी तो बहुत–सी मुसीबतों का सामना करना पड़ा। भाग्यवश हम भी आज खुशहाल हैं।" अन्नपूर्णा ने कहा।

गंगाधर के आठवें साल की उम्र में उसके पिता गुज़र गये थे। झोंपड़ी के चारों ओर

जो खाली जगह थी, उसमें नारियल के पेड़ थे । गंगाधर नारियल एक गाड़ी में लादकर गली–गली घूमते हुए बेचा करता था । उसकी माँ तीन–चार घरों में नौकरानी का काम करती थी । बचपन से ही गंगाधर ने माँ का साथ दिया और अब उसने एक अच्छा घर भी बना लिया ।

पिछवाड़े के कुएँ के पास उसने पाँव धोये और लौटते हुए माँ से बोला "माँ, आखिर तुमने और तुम्हारे बचपन की सहेली ने क्या बातें कीं?"

"वह कोई अंटसंट बातें करने नहीं आयी । उसके इकलौते बेटे की शादी होनेवाली है । शादी एक सप्ताह के अंदर होगी । उसका आग्रह है कि हम शादी के चार दिन पहले ही उसके यहाँ पहुँच जाएँ" अन्नपूर्णा ने कहा ।

थोड़ी देर गंगाधर सोचता रहा और फिर माँ से बोला "हो सकता है, वह तुम्हारी निकट सहेली हो, परंतु तीन-चार दिन पहले ही उनके यहाँ जाना उनके लिए और हमारे लिए भी असुविधाजनक होगा । हम एक दिन पहले जाएँगें । ठीक है ना?"

अन्नपूर्णा को बेटे की यह सलाह अच्छी नहीं लगी, फिर भी 'हाँ' के भाव में उसने अपना सिर हिलाया । जिस दिन वे शादी के लिये निकलनेवाले थे, उस दिन खीरीदे गये क़ीमती कपड़े गंगाधर को दिखाती हुई बोली, " मैंने ये कपड़े दुल्हे के लिए खरीदा है । कैसे लगे?"

गंगाधर के चेहरे से लगता था कि वह माँ के काम से संतुष्ट नहीं हुआ ।

बोला "अच्छे तो हैं, लेकिन तुम्हें शहर ले जाने और डाक्टर को दिखाकर तुम्हारी तबीयत को सुधारने के लिए यह रक़म सुरक्षित रखी थी। उस रक़म में से क़रीब सौ रुपये तुमने खर्च कर दिये। बस, इसी का मुझे खेद है।"

अन्नपूर्णा कुछ कहने ही वाली थी, लेकिन उसने अपने आप को रोक लिया और चुप रह गयी।

शाम को वे दुल्हे के घर पहुँचे। दूसरे दिन सबेरे शादी है। कीमती पोशाक पहने हुए वहाँ के लोगों ने, साधारण वस्त्र पहने हुए इन दोनों की ओर ध्यान ही नहीं दिया।

दो-तीन कमरों से होते हुए जब वे आगे बढने लगे तब उसकी सहेली इंदुमति ने अन्नपूर्णा को देखा। "आओ,आओ" कहती हुई उसका हाथ पकड़ लिया।

अन्नपूर्णा ने पूछा "आख़िर दुल्हा है कहाँ?"

"इतनी उतावली क्यों हो रही हो? आओ, दिखाती हूँ" कहकर इंदुमती माँ और बेटे को महल के पीछे के भाग में ले गयी।

वहाँ दुल्हा कमल अपने दोस्तों के साथ बैठा हुआ था। वे आपस में बातें करते हुए ज़ोर से हँसते जा रहे थे।

माँ इंदुमति को देखते ही कमल झल्लाता हुआ बोला "माँ, मैंने तुमसे कितनी बार बताया है कि जब मैं अपने दोस्तों के साथ हुँ, तब बेकार मत आया करो।"

उन कड़वी बातों से इंदुमति खिन्न हुई और बोली "मेरी सहेली तुम्हें देखना चाहती थी तो उसे अपने साथ लायी हूँ"।

"ऐरे-ग़ैरे सब तुम्हारी सहेलियाँ हैं"
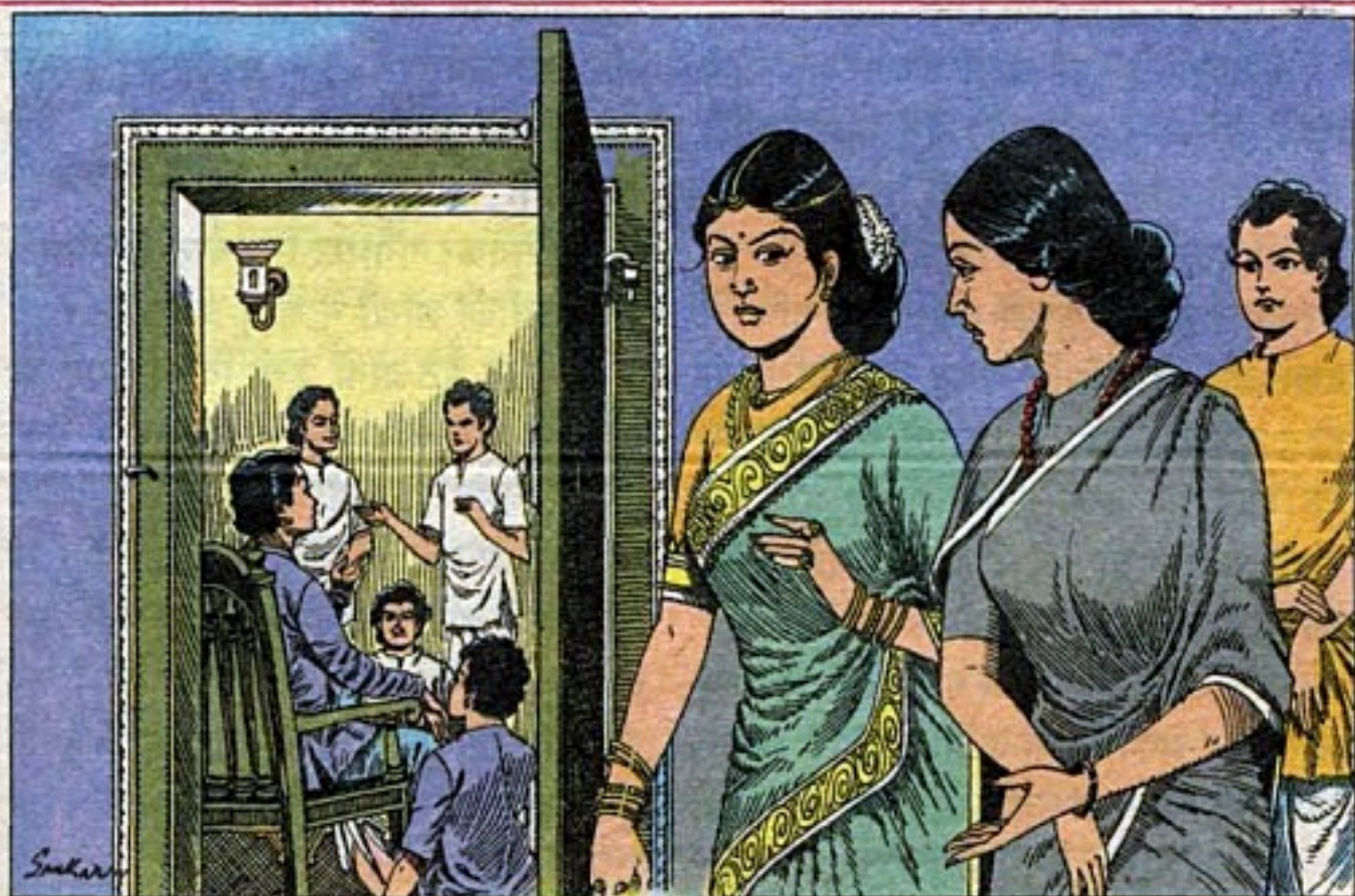
कमल ने अन्नपूर्णा और गंगाधर को हेय भाव से देखते हुए कहा ।

अन्नपूर्णा उसकी बातों की परवाह किये बिना उसके पास आयी और बोली"शादी करके सौ साल सुख से रहो, फलो, फूलो" कहती हुई उसने नये कपड़े उसे दिये ।

कमल ने उन कपड़ों को तीक्षण दृष्टि से देखा और कहा"सही समय पर भेंट लायी हो । हमारा नौकर शिकायत कर रहा था कि शादी के अवसर पर आपने मुझे नये कपड़े नहीं दिया" यें कहकर उसने अपने नौकर को बुलाया और वे कपड़े उसे दे दिया । अन्नपूर्णा और इंदुमति ने एक दूसरे को देखा और सिर झुका लिया । वे कमरे से बाहर आ गयीं । गंगाधर इस अपमान से क्रोध के मारे तिलमिला रहा था ।

दो गलियों के पार जो बहुत बड़ा महल था, उसमें बड़ी धूमधाम से शादी संपन्न हुई ।

दुल्हन देखने में बड़ी ही भद्दी लगती थी । बड़ी ही बदसूरत थी । जब दोस्तों ने कमल से दुल्हन का जिक्र किया तो कमल ने अन्नपूर्णा और गंगाधर की उपस्थिति की भी परवाह किये बिना कहा "क्या करूँ मैं? मैं जो व्यापार कर रहा हूँ, उससे मैं प्रसन्न नहीं हूँ । समुद्री व्यापार करने के लिये बड़ी रकम की ज़रूरत है । यह शादी करने पर पाँच लाख का दहेज मिलेगा । इसलिए मैंने दुल्हन की बदसूरती का भी ख्याल नहीं किया है । जब यह शादी मुक़र्रर हुई तो और लोगों ने अपनी लड़की से शादी करने पर दस लाख देने की बात की है । वह लड़की और भी बदसूरत है । पर क्या करता? यह शादी करनी ही पड़ी । यही मेरा दुर्भाग्य है" ।

यह सुनकर गंगाधर निश्चेष्ट रह गया । अन्नपूर्णा की आँखों में आँसू आ गये ।

माँ और बेटे दोनों उसी दिन किराये की गाड़ी में घर लौट पड़े । गंगाधर ने देखा कि माँ बहुत ही दुखी है और बीच-बीच में अपने आँचल से आँसू पोंछ रही है । माँ की यह स्थिति गंगाधर से देखी नहीं गयी तो उसने कहा "माँ, कमल के किये गये अपमान से, उसके दुर्व्यवहार से अब भी तुम्हें दुख पहुँच रहा है ना? हम कर भी

क्या सकते हैं? वह तो ठहरा बड़ा घमंडी। अब बस करो।"

तब अन्नपूर्णा ने कहा "जानते हो, यह कमल कौन है?" वह अपने दुख को काबूमें रखती हुई बोली। गंगाधर माँ के इस प्रश्न पर चकित रह गया और कहा "तुमने कहा तो है कि वह तुम्हारी सहेली इंदुमति का बेटा है"।

"नहीं, वह तुम्हारा भाई है। आज तक मैंने तुमसे यह रहस्य छिपा रखा है। अब तुम्हें बताये बिना नहीं रह सकती" उसने गंभीरता से कहा।

पति के देहांत के बाद अन्नपूर्णा अग़ल–बग़ल के घरों में नौकरानी का काम करने लगी। उस समय गंगाधर आठ साल का था। वह गलियों में नारियल बेचा करता था। उसका भाई कमल दो साल का था।

एक दिन इंदुमति दुपहर के समय गाड़ी में अपने घर लौट रही थी। लू लगने से वह बेहोश हो गयी। उसे बेहोश होते देखकर गाड़ीवाला बहुत ही घबड़ा गया, और अन्नपूर्णा की झोंपड़ी के सामने गाड़ी रोक दी। गंगाधर उस समय नारियल बेचकर घर लौटा था तो उसने बेहोश इंदुमति को देखा। उसने नारियल का पानी इंदुमति के चेहरे पर छिड़का। जब वह होश में आयी तो उसे नारियल का पानी पिलाया। शाम तक आराम करने के बाद इंदुमति के होश ठिकाने आये। उसे गंगाधर भगवान लगने लगा।

जाने के पहले इंदुमति अन्नपूर्णा को थोड़ी दूर ले गयी और बोली "तुम्हारे बेटे ने आज मेरी जान बचायी है। मेरी कोई संतान नहीं है, इसलिये मैं किसी को गोद लेना चाहती हूँ। तुम्हें कोई एतराज़ ना हो तो गंगाधर को मैं गोद लूँगी। तुम अच्छी तरह सोच लो और चार दिनों के अदंर मुझे खबर भेजना"। उसने अपना नाम और पता एक कागज़ पर लिखकर दिया।

"गंगाधर बड़ा हो गया है। मेरी मदद कर रहा है। मेरे कामों में हाथ बँटा रहा है। उसे गोद दे देने से मेरी तकलीफें और बढ़ जाएँगी। छोटे कमल का पालन–पोषण भी ठीक तरह से कर नहीं पा रही हूँ। मेरी इच्छा तो नहीं है, लेकिन उसे गोद दे देने

से उसका भविष्य भी अच्छा होगा" अन्नपूर्णा ने ऐसा सोचा और वह एक निर्णय पर पहुँची। उसने औरों से कहा कि मैं कुंभ मेला जा रही हूँ। वह इंदुमती के घर गयी और कमल को इंदुमति के हाथों सौप दिया।

"हाँ, तुमने सही निर्णय ही लिया है। इससे इसको अपने बचपन की याद नहीं आयेगी। वह यही समझेगा कि मैं इसीका ही बेटा हूँ। परंतु एक शर्त। इस जन्म में तुम कभी भी मेरे घरमें कदम नहीं रखोगी" कहती हुई इंदुमति उसे दस हज़ार रुपये देने लगी।

अन्नपूर्णा ने इनकार करते हुए कहा "मैं अपने बेटे को बेच नहीं रही हूँ। उसके सुखद भविष्य के लिये अपने दिल पर पथ्थर रखकर उसका त्याग कर रही हूँ। कम से कम उसकी शादी पर बुलाओगी तो माँ के नाते उसे आशीर्वाद देकर लौटूँगी" इतना ही बताकर वह घर लौट पड़ी।

जब वह गाँव लौटी तो सब से यह कहकर उन्हें विश्वास दिलाया कि मेरा बेटा कुँभमेला में गुम हो गया है।

अपने बेटे को उसने सारा वृत्तंत सुनाया और कहा "सचमुच कमल की जगह तुम्हें होना चाहिये था। वह सारी जायदाद व वैभव तुम्हारे थे। इंदुमति पहले तुम्हें ही गोद लेना चाहती थी।"

गंगाधर इसपर हँस पड़ा और बोला "माँ, संसार में सुखी व संतृप्त जीवन बिताने के लिये धन एकमात्र साधन नहीं है। देखो ना, कमल के पास इतनी संपत्ति है, लेकिन क्या वह संतृप्त है? दहेज की लालच में उसने एक बदसूरत लड़की से शादी रचायी। और भी अधिक दहेज ले आनेवाली लड़की से शादी ना करने की अपनी लाचारी से निराश है। भाई के पास तृप्ति नामक जो असली धन नहीं है, वह मेरे पास असीम मात्रा में है।"

बेटे की इन बातों से अन्नपूर्णा को लगा मानों भारी बोझ सिर से उतर गया है। बेटे की इस बिचारधारा और मनोप्रवृत्ति से वह बहुत ही आनंदित हुई। इससे बढ़कर एक माँ को और क्या चाहिये?
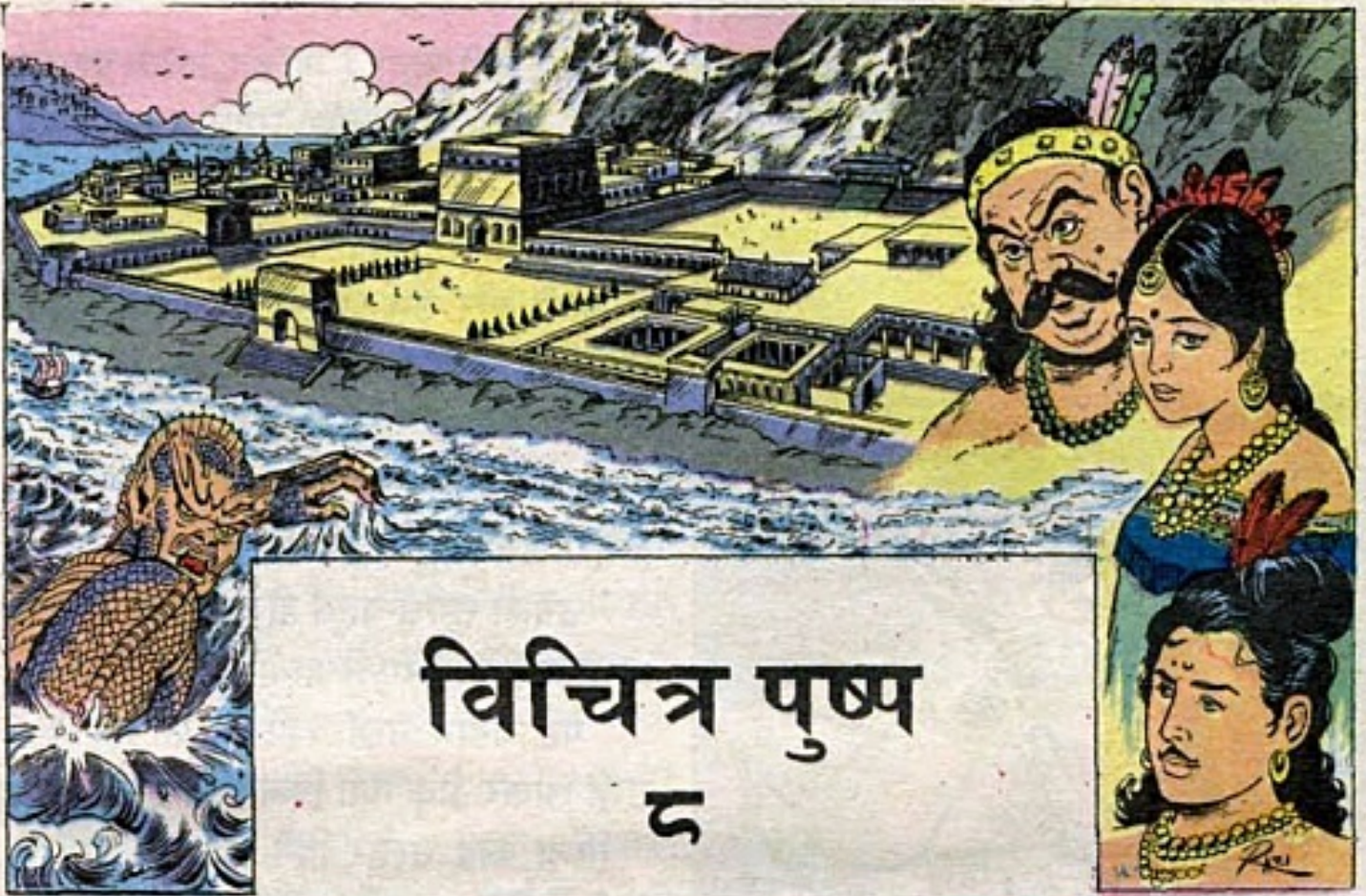
विचित्र पुष्प

८

('शताब्दिका' पुष्पों को लिये आधी रात को उत्तुंग समुद्र—गर्भ में निकल पड़ा । वहाँ उसने राक्षस जंतु को देखा । वह भूमि को ढूँढ़ता हुआ लौटने लगा तो एक बड़ी लहर ने उसकी नाव को झकझोरा, उठाया और समुद्री तट पर फेंक दिया । जब वह झपकी ले रहा था, तब कुछ पहाड़ी जाति की युवतियाँ वहाँ आयीं । उन्होंने 'शताब्दिका' पुष्प लिये और वे अपनी बस्ती की ओर निकल पड़ीं । उत्तुंग भी उनके पीछे—पीछे बस्ती में गया ।)—बाद—

बिछी हुई चटाई को दिखाते हुए हृष्ट-पुष्ट आदमी ने पूछा "श्रृंग्माय पर्वतीय प्रदेशों से इतनी दूर अकेले कैसे चले आये?"

चटाई पर बैठते हुए उत्तुंग ने कहा "माणिक्यपुरी के दक्षिणी सरहद से मैं कल शाम को नाव में निकला हूँ । सबेरे समुद्र में एक बड़ी लहर उठी, जिससे मेरी नाव तट पर जा गिरी । मैं यहाँ जान—बूझकर आया नहीं हूँ ।"

इतने में अंदर के कमरे से एक प्रौढ़ा दो चौड़े बरतनों में खाने और पीने की चीज़ें लेकर आयी । उन्हें उसने उनके सामने रख दिया और अंदर चली गयी ।

उस हृष्ट—पुष्ट आदमी ने एक बरतन लिया और दूसरा बरतन उत्तुंग को दिखाते हुए कहा 'लो' ।

"जैसे ही मैं यहाँ आया, उस प्रौढ़ा ने मुझे

पिलाया और मेरी प्यास बुझा दी" कहते हुए उसने गिलास को हाथ में लिया ।

उस हट्टे-कट्टे मज़बूत आदमी ने पूछा "यहाँ कब आये हो?"

उत्तुंग ने कहा "मैं यहाँ नहीं आया था, लाया गया हूँ ।"

उस आदमी ने पूछा"कौन ले आये?"

पीने के बाद गिलास नीचे रखते हुए उत्तुंग ने कहा "नाव के साथ जब मैं समुद्री तट पर फेंक दिया गया, तब मैं बहुत थका हुआ था । थोड़ी देर आराम करने के लिए मैने अपनी आँखें बंद की । हँसी की ध्वनियों से मैं जाग पड़ा और मैने देखा कि पहाड़ी जाति की कुछ युवतियों से मैं घिरा हुआ हूँ । उनके हाथों में मेरे लाये हुए फूल थे । उनकी बातें मैं समझ नहीं पाया । लेकिन उनके इशारों को मैं समझ गया और उनके साथ–साथ आया ।"

इतने में वह प्रौढ़ा फूलों का एक गट्ठर ले आयी और उस आदमी के सामने रखती हुई बोली"काबूई, हमारी लड़की ये फूल ले आयी है । देखा, कितने सुँदर लग रहे हैं?"

उस आदमी ने पूछा"अच्छे तो हैं, लेकिन हमारी लड़की उन्हें क्यों ले आयी?"

"उनकी सुगंध बहुत ही अच्छी है । उन्हें अच्छे लगे, इसलिए ले आयीं" प्रौढ़ा ने कहा ।

"यह जवान उन्हें कहीं ले जा रहा है । उन्हें लाकर ठीक नहीं किया" उसने कहा ।

बिना कोई उत्तर दिये वह स्त्री वहाँ से चली गयी । उनकी बातें उत्तुंग की समझ में नहीं आयीं, लेकिन वह समझ गया कि काबूई इस क़बीले का प्रधान है ।

"इन्हें 'शताब्दिका' पुष्प कहते हैं । एक अति आवश्यक कार्य पर दूर प्रदेश में ले जा रहा हूँ" उत्तुंग ने कहा । लेकिन उसने असली बात छिपा रखी । काबूई ने उससे कहा "हमारे प्रांत का नाम नागपुरी है । यह माणिक्यपुरी के समीप ही है । तुम्हें यहाँ से और कितनी दूर जाना है? तब तक, ये फूल मुरझा जायेंगे ना?" वह चाहता था कि उत्तुंग से सारी बातें विशद रूप से जानूँ ।

उत्तुंग ने भी सोचा कि अब बात छिपाने से कोई उपयोग नहीं है । अपनी यात्रा के लक्ष्य के बारे में उसने काबूई को संक्षेप में बता दिया । सब कुछ सुनने के बाद काबूई

ने कहा "समुद्र के मध्य राक्षस जंतु का सामना करने का तुमने निश्चय किया है। तुम्हारा साहस बहुत ही प्रशंसनीय है। विपत्ति से घिरे अपने राज्य की जनता की रक्षा करने का तुम्हारा संकल्प बहुत ही उत्तम है। तुम एक आदर्श युवक हो। उस राक्षस जंतु से हमारा कोई नष्ट नहीं होगा। हम पर किसी प्रकार की विपत्ति नहीं आयेगी, क्योंकि हमारे प्रांत के चारों ओर ऊँचे पहाड़ क़िले की दीवारों की तरह घिरे हुए हैं। प्रकृति ने यह वर हमें प्रदान किया है। हमारे प्रांत को शत्रुओं के आक्रमण का कोई भय नहीं है। हम सुख-शांति से अपना जीवन व्यतीत कर रहे हैं।"

"हाँ, यह सच है। परंतु हमारा माणिक्यपुरी का समुद्री तट सुदीर्घ है। इसी कारण वह राक्षस जंतु हमारे राज्य में अशांति फैला रहा है। मेरे सामने एक ही मार्ग है और वह है, इन 'शताब्दिका' पुष्पों को उसके निवास-स्थल पर पहुँचाना।" उत्तुंग ने कहा।

"तुमने अभी-अभी कहा था कि तुम्हारे पहाड़ों में फैले हुए 'शताब्दिका' पुष्पों के पेड़ों को समूल काट दिया है। तुमने अभी-अभी यह भी कहा है कि इन फूलों के विकसित होने में और सौ साल लगेंगे। तब तो उस राक्षस जंतु के माणिक्यपुरी में निकट भविष्य में फिर से आने की कोई गुँजाइश ही नहीं है ना?" काबूई ने पुछा।

"आपने ठीक ही कहा है। फिर भी उस राक्षस जंतु को, जितनी दूर हो सके, ले जाने का प्रयत्न कर रहा हूँ।" उत्तुंग ने कहा।

"तुम्हारा प्रयत्न समुचित है। फिर भी मैं तो समझता हूँ कि उस राक्षस जंतु को तुम्हारे राज्य में ना आने से रोकने के लिए कोई और मार्ग सोचो तो अच्छा होगा। इसके बारे में हमारे राजा की सलाहें लो और फिर इस प्रयत्न में लगो तो सब दृष्टियों से अच्छा होगा। भोजन करने के बाद आज ही तुम्हें हमारे राजा महेंद्र सिंग के पास ले जाऊँगा।" उत्तुंग से यह कहकर उसने अंदर का दरवाज़ा खटखटाया।

अंदर से वह स्त्री आयी। काबूई ने अपनी भाषा में उससे कुछ बताया। दूसरे ही क्षण वह अंदर से भोजन पदार्थ ले आयी और उत्तुंग के सामने रखा। उसके साथ एक

युवती भी आयी । बरतन रखकर जब वह अंदर जा रही थी तब काबूई ने उसे 'चित्रा' कहकर पुकारा । 'आपने बुलाया?' कहती हुए उसने काबूई की और देखा ।

'हाँ, इधर आओ' । फिर उत्तुंग को देखते हुए काबूई ने कहा "यह मेरी बेटी चित्रा है । चित्रा, तुम्हारी सहेलियाँ कहाँ हैं?"

उसने दरवाज़ा दो तीन बार खटखटाया । अंदर से पाँच युवतियाँ आयीं ।

उत्तुंग से काबूई ने कहा "ये सब चित्रा की सहेलियाँ हैं ।" फिर उनको देखते हुए पूछा "इन फूलों को नाव से क्यों ले आयी हो?"

"ये पुष्प बहुत ही सुंदर हैं । अच्छी सुगंध है इनमें । इसलिये हम ले आयीं," उत्तुंग को एकटक देखती हुई बोली ।

"अच्छा, अब तुम लोग जाओ" काबूई ने कहा ।

'हाँ' कहती हुई वे युवतियाँ अंदर चली गयीं ।

भोजन हो जाने के बाद काबूई राजा का दर्शन करने उत्तुंग को अपने साथ ले गया । काबूई की पत्नी और पुत्री ने दरवाज़े तक आकर उन्हें बिदा किया ।

बस्ती के बाहर आते ही काबूई ने फूल उत्तुंग को दिया और कहा "इन्हें अपने ही पास रखो ।" फिर वह आगे—आगे जाने लगा ।

उत्तुंग, काबूई के पीछे—पीछे मौन जाने लगा । बहुत दूर और जाने के बाद एक असमतल पहाड़ी को पार किया और नागपुरी राजधानी के निकट पहुँचे ।

जब वे नागपुरी की गलियों से गुज़र रहे थे तो सब लोग काबूई के साथ बड़ी इज्ज़त के साथ पेश आये ।

सामने से आते हुए कुछ लोग हट गये और नमस्कार करते हुए रास्ता दिया । लंबे और हृष्ट-पुष्ट काबूई की रूप-रेखाएँ गंभीर लग रही थीं । उसके सिर पर छोटा-सा नाग मुकुट था । उसकी वेष-भूषा विचित्र थी । हाथ में बड़ा भाला था । उत्तुंग ने देखा कि सामने से आते हुए लोग उसे देखकर उसकी इज्ज़त भी कर रहे हैं और साथ ही डर भी रहे हैं ।

जैसे ही वे राजमहल पहुँचे, सैनिकों ने

काबूई को नमस्कार किया । एक पहरेदार उन्हें राजप्रासाद के अंदर ले गया । दोनों ओर बड़े–बड़े खंभे थे । मार्ग बहुत ही विशाल था । उन्हें एक जगह पर रुकने को कहा गया और पहरेदार अंदर गया । उसने राजा से काबूई के आगमन का समाचार बताया ।

राजा सिंहासन पर आसीन थे । वे मंत्रियों से चर्चाओं में मग्न थे । राजा को देखते ही काबूई ने झुककर प्रणाम किया ।

"काबूई, तुम्हारे क़बीले के सब लोग सकुशल हैं न? उन्हें किसी बात की कमी तो नहीं?" राजा ने मुस्कराते हुए काबूई से पुछा ।

काबूई ने कहा "प्रभू, आपकी दया से सब सकुशल हैं ।"

राजा ने उत्तुंग को देखा । उसने भी राजा को काबूई की तरह झुककर प्रणाम किया ।

"यह युवक माणिक्यपुरी से आया हुआ है । नाम उत्तुँग है" काबूई ने कहा ।

"अच्छा, तुम्हारे राजा प्रताप वर्मा सकुशल हैं ना?" राजा ने पुछा ।

विनयपूर्वक उत्तुंग ने उत्तर दिया "वे सकुशल हैं ।"

राजा ने हाथ दिखाते हुए उन्हें सामने के आसानों पर बैठने का इशारा किया । वे दोनों बैठ गये ।

"अनजाने में उत्तुंग हमारे राज्य में आया है" कहते हुए उत्तुँग के हाथों से फूल लिये और राजा के सम्मुख रखा ।

"तुम लोगों के अंदर आते ही विचित्र सुगंधि फैल गयी । अब कारण समझ में आया है" राजा ने कहा ।

"उत्तुंग इन्हें श्रृंग्माय पर्वतों से ले आया है । सौ सालों में एक बार विकसित होनेवाले विचित्र पुष्प हैं ये । इसलिये इन्हें 'शताब्दिका' पुष्प कहा जाता है" काबूई ने कहा ।

राजा ने बड़े आश्चर्य से कहा "अच्छा, तो माणिक्यपुरी के राजा प्रताप वर्मा ने हमारे लिए इतनी दूर से ये पुष्प भेजा है?"

"नही प्रभू" कहते हुए उसने सविस्तार विवरण दिया । उसने बताया कि इन पुष्पों के कारण माणिक्यपुरी किन विपत्तियों में फँस गया है । राक्षस जंतु की खोज में उत्तुंग कैसे निकला और यहाँ कैसे पहुँचा, आदि

का विवरण देते हुए काबूई ने कहा "राजन्, मैं चाहता था कि यह बात आपको बतायी जाए और आपकी सलाह ली जाए । इसलिए उत्तुंग को अपने साथ आपके समक्ष ले आया हूँ ।"

"जनता के कल्याण के लिए उत्तुंग ने यह जिम्मेदारी अपने कंधों पर ली है । इसका साहस बहुत ही प्रशंसनीय है । उस राक्षस जंतु का अकेले ही सामना करना उचित नहीं होगा । इस साहसी युवक के साथ अपने कुछ वीरों को भी भेजने का प्रबंध करेंगे" राजा ने कहा ।

इतने में पंद्रह साल की एक लड़की आयी और पूछा "पिताश्री, ये फूल कहाँ से लाये गये हैं? ये तो बहुत ही सुंदर हैं ।"

राजा ने उसे बडे लाड़ से अपने पास बिठाया और मुस्कुराते हुए कहा "बेटी, माणिक्यपुरी से वह युवक तुम्हारे लिये ये फूल ले आया है ।"

"क्या सचमुच मेरे लिए ले आया है?" कहती हुई उसने आश्चर्य से उत्तुंग को देखा ।

उत्तुंग की समझ में नहीं आया कि क्या ज़बाब दूँ, तो वह सिर्फ़ मुस्कुराते हुए रह गया ।

आप ही आप वह सोचने लगा कि राजा को अपनी बेटी से झूठ बताने की क्या ज़रूरत आ पड़ी? वे तो कह सकते थे कि मैं किसी काम पर इन पुष्पों को दूर प्रदेश ले जा रहा हूँ । अवश्य ही दाल में कुछ काला है । उसे लगने भी लगा कि अगर यह लड़की इन फूलों को ले लेना चाहे तो मै करूँ क्या? वह समझ भी गया कि राजा अपनी बेटी को बहुत चाहते हैं । किसी भी हालत में बेटी को खुश रखने के लिए ये फूल ले लें तो मुझे क्या करना होगा? राजा तो स्वयं जानते हैं कि मैं कितने महत्वपूर्ण काम के लिए निकला हूँ और ये फूल ले जा रहा हूँ । फिर भी उन्होने इतना बड़ा झूठ क्यों कह दिया? वह अपने ही आप इन बातों के बारे में विचार-विमर्श करने लगा । उसे घबराहट भी होने लगी । लेकिन अपने मुखड़े पर किसी भी प्रकाट का भाव प्रकट नहीं होने दिया । अपनी घबराहट को छिपाने के लिए वह मुस्कुराता ही रहा ।

राजा ने उससे कहा "यह मेरी बेटी मल्लिका है। यह फूलों को बहुत ही चाहती है।"

"हाँ, राजकुमारी, ये फूल आप ही के लिए ले आया हूँ" उत्तुंग ने कहा।

मल्लिका ने अपने पिता से कहा "पिताश्री, मैं इन्हें ले जाऊँगी।"

"हाँ बेटी, ले जाओ। तुम अंदर जाओ। मैं थोड़ी देर में आऊँगा" राजा ने कहा। बहुत ही प्रसन्न होती हुई मल्लिका उन पुष्पों को लेकर अंदर गयी।

राजा ने काबूई से कहा "उन पुष्पों के शाप, या राक्षस जंतु की बात राजकुमारी को मालूम नहीं होनी चाहिये।" थोड़ी देर राजा मौन सोचता रहा और फिर बोला "काबूई, आज रात को तुम दोनों यहीं विश्राम करो। कल निर्णय करेंगे कि राक्षस जंतु से कैसे निबटें?" कहकर राजा राजमहल के अंदर चला गया!

राजा के जाने तक मंत्री, काबूई और उत्तुंग खड़े ही रहे। उसके जाने के बाद एक मंत्री ने काबूई से कहा "आप दोनों मेरे साथ आइये। आपके ठहरने का प्रबंध करता हूँ।" वह उन्हें अपने साथ ले गया और उन्हें एक विशाल कमरा दिखाते हुए कहा "ये सेवक आपकी सारी आवश्यकताओं की पूर्ति करेंगे। कल सबेरे तक आप यहीं विश्राम कर सकते हैं।" कहकर वह चला गया।

मंत्री के चले जाने के थोड़ी देर बाद एक सैनिक वहाँ आया और बोला "राजकुमारी की आज्ञा है कि मेरे लिए जो युवक पुष्प ले आया है, उसे मेरे पास उपस्थित किया जाए।"

उत्तुंग ने आश्चर्य से काबूई को देखा। काबूई ने कहा "तुम जाओ। लेकिन, राजा की कही बातें अच्छी तरह से याद रखना; सावधान रहना। किसी भी हालत में यह मत बताना मत कि राक्षस जंतु का नाश करने के लिए तुम इन फूलों को ले जा रहे हो। राजकुमारी अभी बच्ची हैं। हो सकता है, वे भयभीत होजाएँ। इसीलिए राजा ने इस बात पर ज़ोर दिया होगा।" काबूई ने यह कहकर उसे सावधान किया। —सशेष

जंतु-धर्म

धुन का पक्का विक्रमार्क पुनः पेड़ के पास आया । पेड़ से लाश को उतारा और अपने कंधों पर ड़ाल लिया । यथावत् मौन श्मशान की तरफ़ बढ़ने लगा । लाश के अंदर के बेताल ने तब राजा से कहा " राजन्, यह घना अंधकार बहुत ही भयंकर लग रहा है । आधी रात की इस वेला में इतने कष्ट उठा रहे हो । मालूम नहीं, तुम्हारे जीवन का क्या लक्ष्य है? समझ में नही आता, आख़िर साधना क्या चाहते हो तुम? ज्ञात नहीं होता कि क्यों तुम इतनी तकलीफ़ें झेल रहे हो? अब भी तुम्हारे ये प्रयत्न मेरे लिए राज़ बनकर ही रह गये हैं । लेकिन एक बात याद रखो, अगर, किसी राजा ने अथवा भोले-भाले लोगों से न्यायशास्त्र में दक्ष कहलाये जानेवाले किसी न्यायाधीश ने तुम्हें ऐसा करने के लिए प्रेरित किया हो तो सावधान रहो । इसी में तुम्हारी भलाई है । क्योंकि राजा का हर निर्णय, न्यायाधीश का

बैताल कथा

हर फ़ैसला नपा-तुला और न्याय-संगत ही होगा, ऐसा अगर तुम समझते हो तो यह तुम्हारा भ्रम है, तुम्हारा अज्ञान है । उदाहरण के लिए रामभद्र नामक एक न्यायाधीश के फ़ैसले के बारे में मुझसे सुनो । उसकी कहानी सुनते-सुनते अपनी थकावट भी दूर करो ।"

पुष्पगिरि राज्य के एक गाँव में वीरदास रहता था। उसका इकलौता बेटा था गंधर्व । गंधर्व बचपन से ही संगीत-प्रिय था । पक्षियों की मधुर ध्वनियाँ बड़े चाव से सुनता था वह । उन ध्वनियों के माधुर्य में अपने-आप को खो बैठता था वह । बहती हुई हवा में भी उसे संगीत ही सुनायी पड़ता था ।

गंधर्व जब पाँच साल का था, तब उसे एक साधु ने देखा और उसने उसके पिता से कहा "इसके मुखमंडल पर सरस्वती की साया है । संगीत की शिक्षा दिलावो । प्रसिद्ध गायक बनेगा ।"

वीरदास को साधु की ये बातें अच्छी नहीं लगीं । उसने बचपन से बेटे को खेती के कामों में लगाया था । वह अपने बेटे से कहा करता था कि खेत में काम करने से तुम खुद भी खाओगे और दो-चार लोगों को खिला भी पाओगे । संगीत से तो कोई लाभ नहीं होगा । वह व्यर्थ की विद्या है ।"

गंधर्व को खेती-बारी में कोई अभिरुचि नहीं थी । वह कहता ही रहा कि मैं संगीत सीखूँगा । उसके पिता बेटे के इस हठ पर बहुत ही नाराज़ था । उसने उसे खूब पीटा और एक कमरे में बंद किया । दो-तीन दिन खाने-पीने के लिए भी कुछ नहीं दिया । भूख के मारे गंधर्व ने पिता की सब शर्तें मान लीं । फिर भी कभी गंधर्व हठ करता तो पिता उसकी खूब मरम्मत करता था ।

जो भी हो, पंद्रहवें साल में गंधर्व अच्छा किसान कहलाया जाने लगा । मालूम नहीं, उसकी कृषि की महिमा है या उसके भाग्य का चमत्कार, गाँव के सब खेतों से अधिक फसल उसी के खेत में हुआ करती थी ।

एक साल उस गाँव में अकाल पड़ा । दूसरे साल भी अकाल पड़ा । लगातार दो साल अकाल पड़ जाने से वीरदास कर्ज़दार बन गया । उस गाँव के मारवाड़ी ने निर्दयता

के साथ उसके खेत को अपना बना लिया । उसके परिवार को गाँव छोड़ने के अलावा और कोई चारा नहीं था ।

वीरदास का परिवार शहर जाने लगा । वे रास्ते में आराम करने के लिए एक पेड़ के नीचे बैठ गये । तब अकस्मात बंदर का एक बच्चा पेड़ से उनके सामने आ गिरा । वह बंदर बहुत ही घायल था । वीरदास ने घाव धोया और पत्तों से उसकी चिकित्सा की । अपने पास जो फल थे, उसे खिलाया । बंदर का बच्चा अब पालतू हो गया । उसने उसके गले में रस्सी बांध दी, जिससे वह कहीं भाग ना जाए ।

वीरदास का परिवार शहर पहुँचा । वहाँ वे एक पेड़ के नीचे बस गये । गंधर्व शहर की गलियों में जाकर काम की खोज करने लगा । इस बीच वीरदास ने बंदर को तरह-तरह के खेल सिखाये । शुरू-शुरू में बंदर उसके कहे मुताबिक करने तैयार नहीं था । तब उसने उसे भूखा रखा । लकड़ी लेकर उसे मारा । जब वह बंदर उसके कहे मुताबिक़ करता तो वह उसे खूब खिलाता था । इस तरह एक हफ़्ते के अंदर बंदर ने बहुत-से खेल सीखे ।

वीरदास बंदर को अपने साथ शहर ले जाता और उससे तरह-तरह के करतब करवाता । उसके करतब देखने लोगों की भीड़ जमा हो जाती थी । लोग पैसे भी फेंकते थे । इससे वीरदास को खूब पैसे मिलने लगे । गंधर्व दिन भर मेहनत करता था, लेकिन उसकी कमाई बंदर की कमाई में आधी भी नहीं होती थी ।
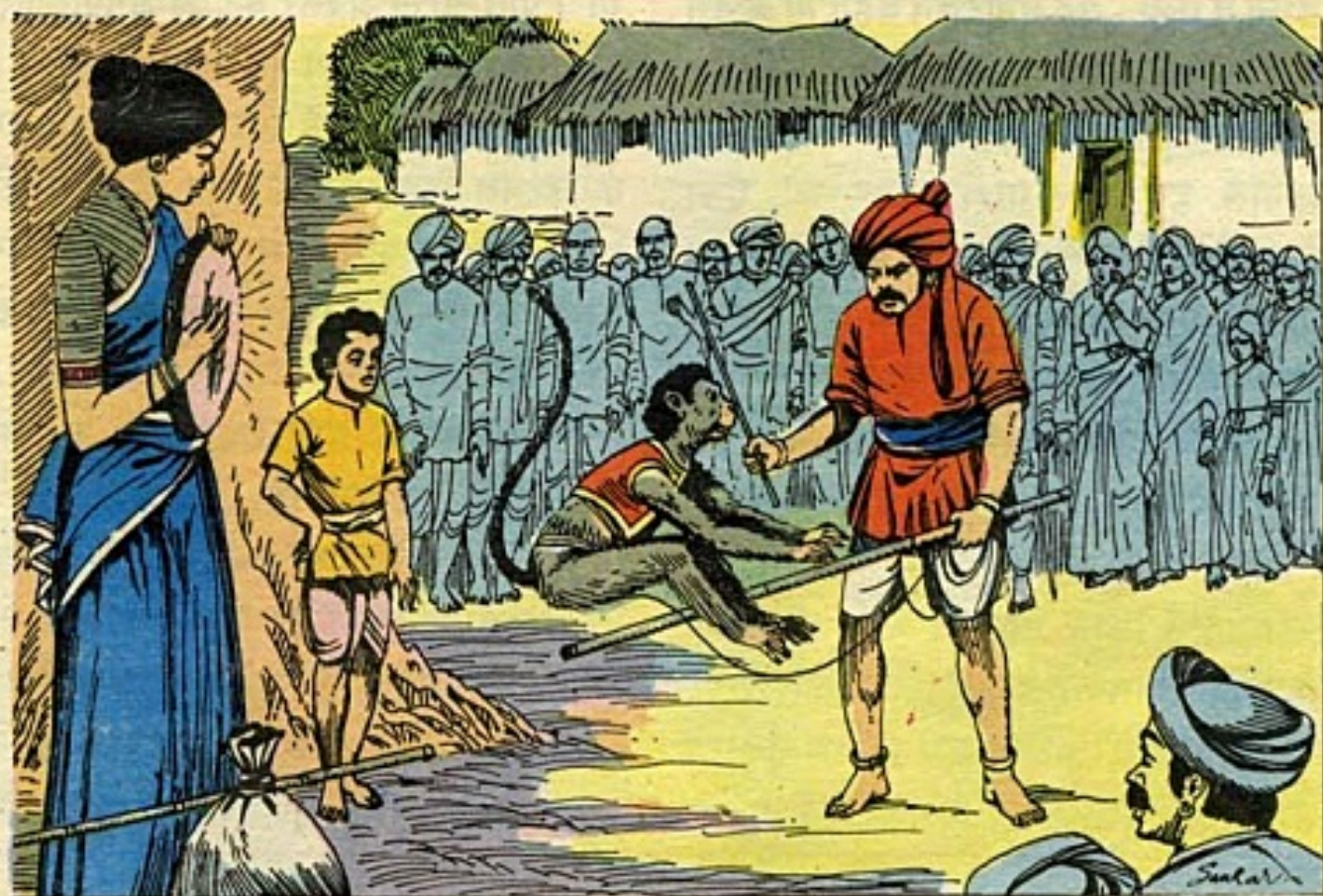
बंदर को नचाते हुए अपने पिता को देखकर गंधर्व ने कहा "यह मनोरंजन बहुत ही अच्छा है । लेकिन बहुत ही जल्दी जनता का मन इससे उचट जाने का ख़तरा भी है । मैं ड़फ़ली बजाते हुए गाऊँगा । बंदर को ऐसा सिखाएँगे, जिससे वह गीत के साथ-साथ नाचे । एक के बाद एक नया गाना गाता जाऊँगा और बंदर नाचता जायेगा । इससे जनता की अभिरुचि बनी रहेगी और हम अधिक पैसे भी कमा पायेंगे" ।

वीरदास ने बेटे की बात मानी । इस प्रकार जब किया गया तो बंदर की वजह से उनकी आमदनी दस गुना बढ़ गयी ।

अब वह परिवार आराम से दिन गुज़ारने लगा । एक दिन गंधर्व जब गली में गा रहा था, तब एक संगीत–विद्वान उधर से गुज़र रहा था । उसने उसका गाना सुना । वह पास आया और बोला " तुम्हारा स्वर बहुत ही मीठा है । गीत में लय भी है । तुम मेरे साथ आओ । मैं तुम्हें संगीत सिखाऊँगा" ।

गंधर्व जाने के लिए बहुत ही उत्सुक था, पर वीरदास ने इनकार कर दिया । फिर भी, उसने पिता की परवाह नहीं की और वह उस विद्वान संगीतज्ञ के साथ चला गया । वीरदास को इसपर बुहत दुख हुआ । उसने अपने बेटे और विद्वान को खूब गालियाँ दीं ।

यों दो साल गुज़र गये । बंदर के करतब दिखाते हुए वीरदास ने थोडे-बहुत पैसे इकट्ठे किये । उसने एक छोटी-सी झोंपड़ी भी खरीद ली । आराम से वह रह रहा था, लेकिन बेटे के ना होने का उसे ग़म होता रहता था । पति-पत्नी अक़्सर बेटे की अनुपस्थिति पर दुखी हुआ करते थे ।

एक दिन शहर के एक अमीर ने बंदर के करतब दिखालाने के लिए वीरदास को अपने यहाँ बुलवाया । हर एक करतब पर हज़ार अशर्फियाँ देने का उसने वादा किया था । बड़ी आशा लेकर वीरदास वहाँ गया । आज तक इतनी बड़ी रकम एक दिन में उसने कभी नहीं देखी थी ।

वीरदास पहुँचा एक बड़े महल में । जब वह महल के निर्धारित कमरे में गया तो उसने देखा कि वहाँ रेशमी कालीन बिछे हुए थे । रत्नासन पर कीमती पोशाक पहने हुए बैठा हुआ था वह रईस । अकेले ही

उसने बंदर के खेल देखे और वादे के मुताबिक़ उसने अशिर्फियों की थैली बीरदास के सामने फेंकी । तब उसने वीरदास से कहा "लगता है, तुमने मुझे पहचाना नहीं । मैं गंधर्व हूँ । तुम्हारा ऋण चुकाने के लिए ही तुम्हें यहाँ बुलाया है । ये अशर्फ़ियाँ लो और सुख से रहो ।"

वीरदास ने अपने बेटे को पहचाना और कहा "बेटे, तुम्हारे लिए बड़ी बैचैनी से हम इंतज़ार कर रहे हैं ।तुम इतने बड़े कैसे बन पाये?"

"छह महीनों में मैंने संगीत का अच्छा ज्ञान प्राप्त किया । इतने कम अर्से के अंदर मेरे दो कनकाभिषेक भी संपन्न हुए हैं । मैंने बहुत कमाया है । इतना कि दस पीढ़ियों तक यह आमदनी पर्याप्त होगी ।" गंधर्व ने कहा ।

"जब तुम इतनी बड़ी उच्च स्थिति में हो, तब हमें बंदर पर निर्भर रहकर जीने की कोई ज़रूरत नहीं है । यह जानकर तुम्हारी माँ बहुत खुश होगी" वीरदास बहुत ही खुश होता हुआ बोला ।

गंधर्व ने गंभीरता से कहा "तुम किस तरह की ज़िन्दगी गुज़ार रहे हो, इससे मेरा कोई संबंध नहीं । तुम या माँ इस महल में क़दम भी नहीं रख सकते । माँ को देखने की इच्छा हुई, तो मैं खुद वहाँ चला आऊँगा । मुझे तुम लोगों ने पाला-पोसा है, इसके लिए हज़ार अशर्फ़ियाँ देकर मैनेअपना ऋण चुका दिया है । जब मेरी इच्छा हो तभी तुमको धन की सहायता करूँगा । तुम लोग मुझसे कुछ मत माँगो । अब कुछ बोलने की ज़रूरत

भी नहीं है । जा सकते हो ।" कहते हुए वह बग़ल के कमरे में बड़ी तेज़ी से चला गया ।

वीरदास घर लौटा और अपनी पत्नी को सब कुछ बताया । वह बहुत ही नाराज़ होती हुई बोली "सगे पिता से इतना सब कुछ कहने की ज़ुर्रत की उसने? जन्म देनेवाली अपनी माँ को भी घर में क़दम ना रखने की आज्ञा दी उसने? अभी हम न्यायाधीश के पास जायेंगे और उसकी शिकायत करेंगे ।"

पति-पत्नी दोनों न्यायस्थान गये और न्यायाधीश से शिकायत की । उसने तुरंत गंधर्व को बुलवाने का हुक़्म दिया । उससे उसकी सफ़ाई माँगी ।
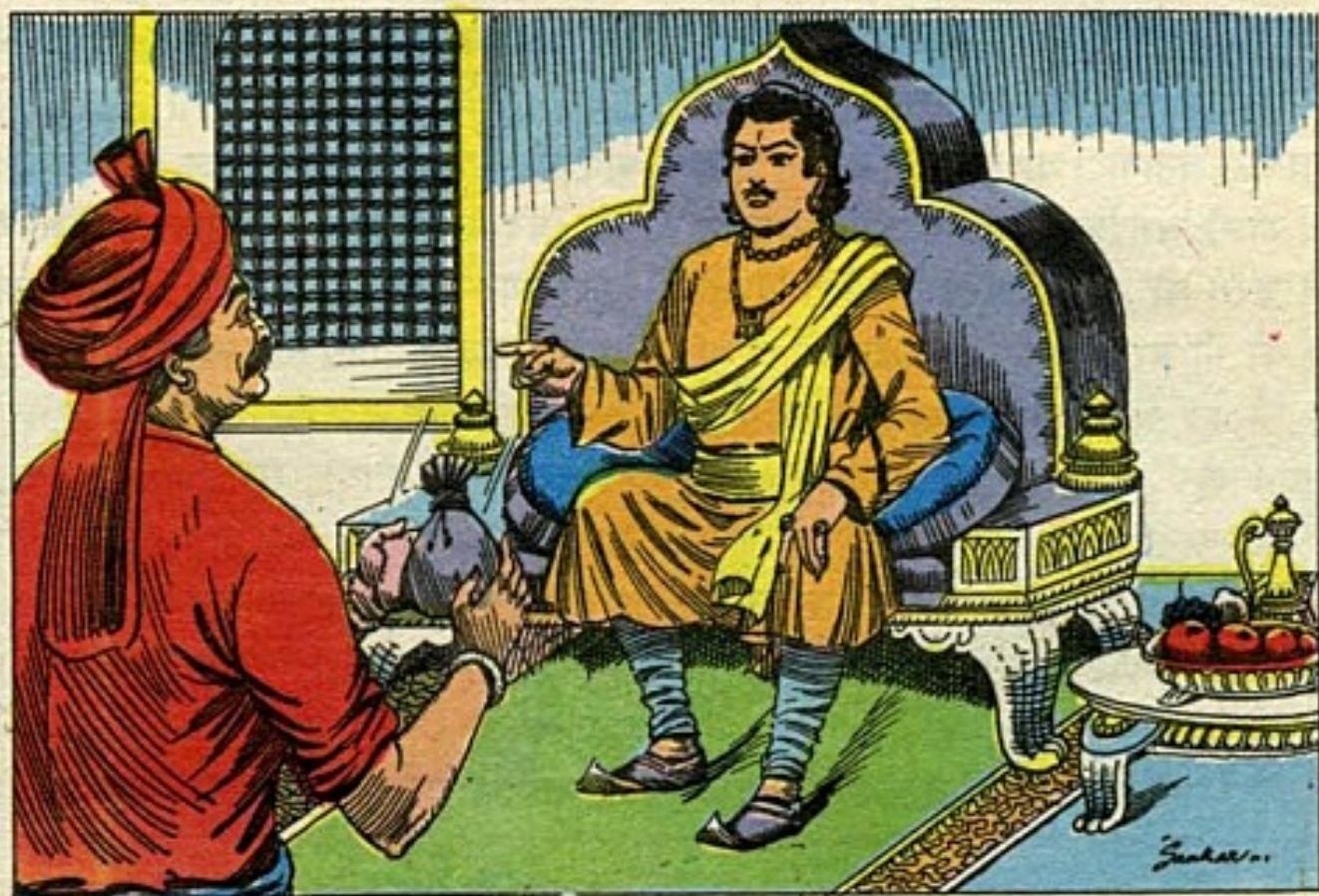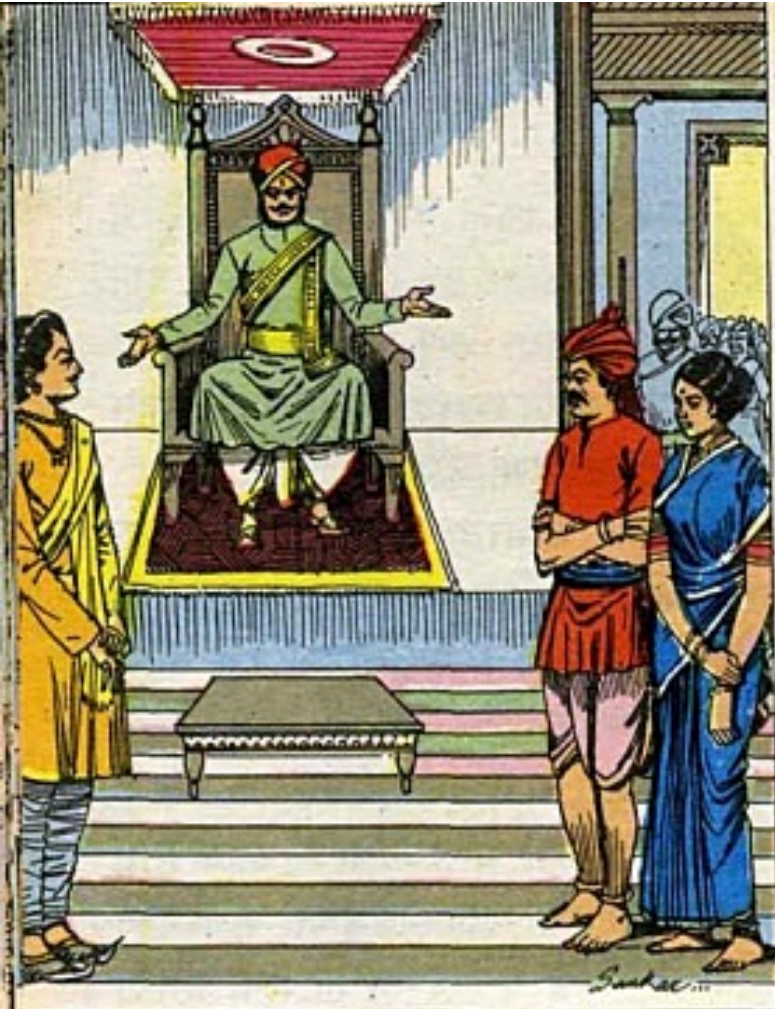
तब न्यायाधीश ने अपना फैसला सुनाया "गंधर्व को जिस संगीतज्ञ ने संगीत सिखाया, उसे उसने परिवार सहित अपने पास रखा और उनकी अच्छी तरह देखभाल कर रहा है । वह संगीतज्ञ को ही अपना पिता मानता है । ऐसा करना न्याय–संगत भी है । लेकिन माँ–बाप को केवल हज़ार अशर्फ़ियाँ देकर अपने ऋण से मुक्त होने का उसका कार्य असंगत लगता है । उसे चाहिये था कि अपनी जगह उन्हें एक बंदर दे ।"

बेताल ने विक्रमार्क को यह कहानी सुनायी और कहा "राजन्, संतान को चाहिये कि अपने माँ–बाप की जिम्मेदारी स्वंय संभालें । जब गंधर्व रईस बना, तब वह इस पवित्र जिम्मेदारी को भूल गया । क्या यह पितृद्रोह नहीं? पंड़ित ही नहीं बल्कि सामान्य व्यक्ति भी जिस धर्मसूत्र को अपना धर्म समझता है, उससे भी हटकर न्यायाधीश ने जो फ़ैसला दिया वह अविवेक से पूर्ण नहीं ? माता–पिता को केवल एक बंदर दिलवाकर क्या न्यायाधीश रामभद्र ने उनके साथ अन्याय नहीं किया? क्या बंदर देने मात्र से एक पुत्र अपने ऋण–भार से मुक्त हो जायेगा? धर्म–अधर्म का भेद ना जाननेवाला ऐसा न्यायाधीश न्याय के साथ अन्याय नहीं कर रहा है? क्या वह न्याय करने की योग्यता रखता है? मेरे संदेहों का समाधान जानते हुए भी नहीं दोगे तो तुम्हारा सिर टुकड़ों में फट जायेगा ।

विक्रमार्क ने उत्तर दिया "मानव भी एक जंतु है । चूँकि उसमे बुद्धि है, सोचने की क्षमता रखता है, इसलिये वह जंतुओं

से अलग माना जाता है । जन्म से ही निर्णीत होता है कि कौन-सा जंतु क्या काम करेगा? मानव के बारे में यह बात लागू नहीं होती । क्योंकि वह अपनी शक्ति और सामर्थ्य से निर्णय करता है कि उसे क्या करना चाहिये । इसीलिये कुछ मानव कवि बनते हैं तो कुछ चित्रकार । कुछ खेती करते हैं तो कुछ शासक बनते हैं । अपनी संतान की योग्यताओं तथा अभिरुचियों के अनुसार उन्हें प्रोत्साहन देना माता–पिता का धर्म है । यह मानव-धर्म है । वीरदास ने ऐसा ना करके अपने बेटे को ज़बरदस्ती अपने पेशे में बंदी बनाये रखा । पुत्र की इच्छा की परवाह किये बिना, अपने इच्छानुसार उसे अपने यहाँ रखा । खेती के साथ–साथ संगीत सीखने का मौक़ा उसे नहीं दिया । जो बंदर मिला, उसे खूब मारा,पीटा, ड़राया, धमकाया और उसे नये–नये करतब सिखाये । अपने बेटे से भी वह ऐसे ही पेश आया । मतलब यह हुआ कि उसने जंतु–धर्म निभाया है । कहीं से आया हुआ बंदर अपने खेल–कूदों से जो पैसा मिलता था, अपने माँ-बाप को दे नहीं पाया, बल्कि वह पैसा वीरदास को देता रहा । जंतु–धर्म का पालन करनेवाले ऐसे लोगों के बच्चे अपना फल अपने माँ–बाप को नहीं देते । संगीतज्ञ ने, गंधर्व की इच्छा के अनुसार उसे संगीत सिखाया, प्रोत्साहन दिया, उसमें उसे पारंगत बनाया । इसलिये वह मानव–धर्म निभानेवाला पिता है । गंधर्व ने अपने गुरु का आदर किया और मानव कहलाने के योग्य बना । गंधर्व पिता से बचकर आया था, इसलिये धन ना देकर उसका बंदर देना ही न्याय है । क्योंकि वीरदास जंतु मात्र के लिए पिता बनने के योग्य है । एक बंदर को अपने इच्छानुसार शिक्षा देकर वह पैसे कमा सकता है । इन कारणों से न्यायाधीश रामभद्र उत्तम कोटि का न्यायाधीश ही नहीं, न्यायालय का मणिमुकुट है ।"

राजा के इस मौन–भंग से बेताल शव के साथ अदृश्य हो गया और पेड़ पर जा बैठा ।

आधार–जे. रामलक्ष्मी की रचना

घोर अपराध

अन्य राज्यों से हेलापुरी राज्य में सोना ले आना और उसे बेचना निषिध्द कर दिया गया। अन्य राज्यों से अगर कोई सोना लेआये और उसे बेचे तो, उसे कड़ी से कड़ी सज़ा दी जाने लगी।

कलिंग राज्य का एक युवक नगरद्वार में प्रवेश करते हुए तनकीह के अधिकारियों के पास आया और पूछा "महाशय, अगली बार जब नगर में आऊँगा तो क्या मैं सोना बेच सकता हूं?"

अधिकारियों ने गंभीरता से उत्तर में कहा "यह बिलकुल संभव नहीं है। ऐसा करना घोर अपराध है।" फिर उन्होंने उस युवक को नगर में जाने दिया।

दूसरे हफ़्ते जब वह युवक नगरद्वार के पास आया तब तनकीह के अधिकारियों ने उसे पहचाना। उसे द्वार पर ही रोक दिया गया और भली भांति उसकी जाँच की। उसके पास सोना नही मिला।

अधिकारियों ने उससे पूछा "तुमने तो कहा था कि अगले हफ़्ते मैं सोना लाऊँगा और बेचूँगा। इसलिये हमने तुम्हारी जाँच की। बुरा मत मानना।"

युवक ने बड़ी लापरवाही से कहा "अच्छा, यह बात है। आपने तो इस हफ्ते सोना बेचने से मना किया है। इसलिये मैंने तो सोना पिछले हफ्ते में ही बेच दिया है।"

उसके इस जबाब से तनकीह के अधिकारियों के चेहरे पीले पड़ गये।

—काशीराम

भारत के पशु-पक्षी

कौओं का राजा-कौआ नहीं ।

भारत में बहुत ही कम ऐसे पक्षी हैं, जो बिल्कुल काले हों । साधारण कौआ उनमें से एक है । कला 'ड्रांगो' काला होता है । यद्यपि यह कौओं के परिवार में सम्मिलित नहीं है, फिर भी अधिकतर यह कौओं का राजा कहलाया जाता है । हो सकता है कि इस कालेपन के कारण कौओं के साथ इसका संबंध जोड़ा जाता है । 'ड्रांगो' की कुछ भिन्न रूप-रेखाएँ हैं । उदाहरण के लिए उसकी लंबी कैंची के आकार की जुड़वीं पूँछें । यह पक्षी साधारणतया खेतों के इर्द-गिर्द अथवा गाँव के बाहर देखा जा सकता है । यह तार के तारों पर अथवा घेरे के खंभों पर बैठा हुआ रहता है । यह घास पर रेंगनेवाले कीड़ों पर टूट पड़ता है और खा जाता है ।

'ड्रांगो' बड़ा साहसी पक्षी है । यह अधिकतर अपने से भी बड़े पक्षियों से भी लड़ता है । कौवे की तरह यह भी किसी दूसरे पक्षी को अपने घोंसले के पास आने ही नहीं देता । अपने घोंसले के पास दूसरे कौओं के जो घोंसले हैं, उनकी भी यह रक्षा करता रहता है । इसकी इस आदत पर इसे कोतवाल भी कहते हैं ।

भारत में आठ प्रकार के 'ड्रांगो' पाये गये हैं । कैंची के आकार की पूँछवाले 'ड्रांगों' के माथे पर एक गुच्छ होता है । उसकी पूँछ के कोने के अंत में बिखरे तार जैसे दो धब्बे होते हैं । पंख जैसी नोक उससे जुड़ी हुई होती है । उत्तर भारत में इसे भीमराज कहते हैं । सफ़ेद पेटवाला 'ड्रांगों' का पेट भी सफ़ेद होता है । कुछ पक्षियों का राख जैसे रंग का पेट होता है । कुछ पक्षियों की आँखें माणिक्य की तरह चमकती रहती हैं ।

शोभा सिंग
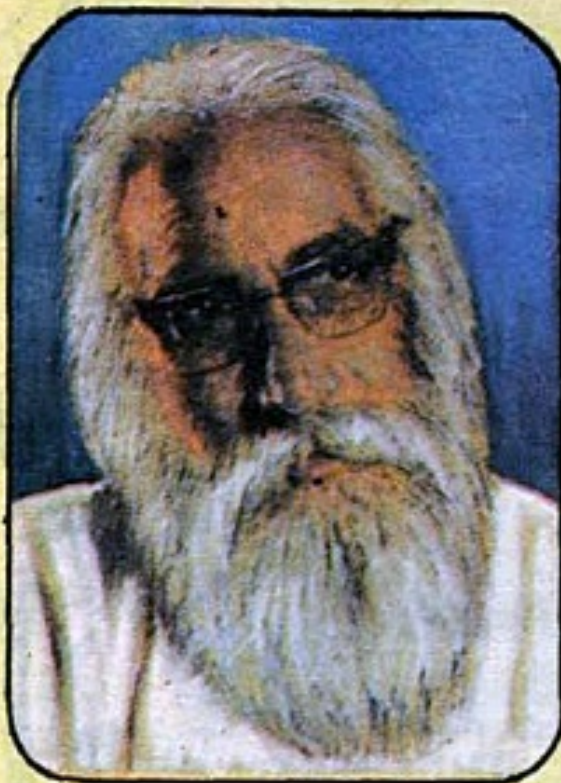
"हलो बालक, तुम भी क्या अपने पिता की तरह सैनिक बनोगे?" एक आगंतुक ने उस बालक से प्रश्न किया।

बालक ने उस आगंतुक को ध्यान से देखा, मुस्कुराया और 'नहीं' का भाव व्यक्त करते हुए अपना सिर हिलाया। फिर उसने उस आगंतुक का ध्यान ज़मीन की ओर खींचा, जहाँ कुछ आकार चित्रित थे। उसका उद्देश्य था कि मैं कलाकार बनने का इच्छुक हूँ।

आगंतुक हँस पड़ा और बोला "अगर तुम चित्र खींचने में ही अपनी ज़िन्दगी गुज़ारोगे तो पेट कैसे भरेगा? रोटी कहाँ से मिलेगी? अगर दूसरा काम तुम करना ही नहीं चाहते हो तो गुज़ारा कैसे होगा?" आगंतुक वह जानना चाहता था कि ऐसा कटु प्रश्न करने पर बालक का क्या रुख होगा?

बालक ने कमरे की ओर इशारा किया जहाँ उसकी दीदी घरेलू कामों में व्यस्त थी।

बालक शोभा को अपनी दीदी बीबी लक्ष्मी देवी पर पर अटूट विश्वास था। जब वे पाँच साल की उम्र के थे, तब उनकी माँ का देहांत हो गया था। उनके पिता सेना में एक सर्वेक्षक थे। उनके पास बालक की देख-भाल के लिए समय ही नहीं था। बीबी लक्ष्मी ने और उसके पति सरदार मंगल सिंग ने बालक के पालन-पोषण की जिम्मेदारी अपने ऊपर ली। पंजाब के हरगोबिंदपुर में शोभा का जन्म १९०१ में हुआ। वे जब दस साल के थे, उनके पिता मर गये। उन्होने बचपन में बहुत ही कम शिक्षा प्राप्त की। पाँचवें दर्जे तक ही उनकी शिक्षा हुई। नक़शानवीसी का उन्हें प्रशिक्षण दिया गया और शीघ्र ही सेना की एक टोली में उन्हें इराक़ भेजा गया। वहाँ उन्हें अपने सीनियर साथियों से अंग्रेज़ी सीखने का मौक़ा मिला। साथ-साथ वहाँ उन्हें कुछ ऐसी पुस्तकें देखने को मिलीं, जिनमें पश्चिम के श्रेष्ठ चित्रकारों के चित्र थे। बचपन में कला के प्रति जो आसक्ति और प्रेम था, वह अब गाढ़ा व मज़बूत हो गया।

१९२३ में वे भारत वापस आ गये। उन्होने शादी की और निश्चय किया कि अपनी जीविका एक चित्रकार बनकर कमाऊँगा। सेना की सेवा से उन्होने इस्तीफ़ा दे दिया। लाहौर में अपना स्टुडियो स्थापित किया। दो विषयों से उन्हें स्फूर्ति प्राप्त हुई।

पहला-गुरुओं मे का साहस, जिन्होंने अपने प्राणों की भी परवाह किये बिना जीवन–संघर्ष किया । दूसरा-पंजाब की प्रेम तथा साहस-भरी लोकप्रिय लोक कथाएँ ।

बाद वे दिल्ली में रहने लगे । १९४२ में लाहौर और अमृतसर के बीच में स्थित आदर्श गाँव में बसने आये । 'प्रीत लरी' नामक पंजाबी पत्रिका के संपादक गुरुबख्श सिंग ने उनके इस गाँव में रहने की व्यवस्था की । परंतु कुछ समय बाद वे लाहौर लौट आये ।

१९४७ में अत्यंत दुखद घटना घटी । वह थी देश का विभाजन । जो अपने पास था, सब कुछ छोड़कर वे वहाँ से निकल पड़े । अपने उत्तम

चित्र भी उन्हीं वहीं छोड़ने पड़े । हिमाचल प्रदेश में कंगारा गाँव में वे रहने लगे । उनकी स्फूर्ति इतनी शक्तिदायक थी कि वे चित्रकला में और अभिरुचि दिखाने लगे । चित्रकार के रूप में उन्होंने यहाँ एक नया अध्याय प्रारंभ किया । तब तक उनकी पर्याप्त ख्याति भी थी ।

१९८६, अगस्त २१ को वे दिवंगत हुए । यद्यपि चित्रकला में उन्हें कोई शिक्षा नहीं मिली फिर भी अपने पैरों पर खड़े होकर उन्होंने अपने व्यक्तित्व को उदाहरण स्वरूप बनाया ।

उनके सुप्रसिद्ध चित्रों में से गुरुनानक तथाअन्य गुरुओं के चित्र हैं । अलावा इनके, भगवान कृष्ण और राम के भी चित्र बहुत ही प्रसिद्ध हुए ।

क्या तुम जानते हो?

१. जीवित पक्षियों में से कौन-सा पक्षी सबसे लंबा है?
२. भारतीय संविधान का प्रारंभ कब से कार्य-रूप में हुआ?
३. पाँच अंतर्राष्ट्रीय भाषाएँ हैं। वे कौन-सी हैं?
४. निम्न लिखित पाँचों में से भारत का असली प्रशासक कौन है?
   १) भारत का राष्ट्रपति २) उपराष्ट्रपति ३) प्रधान मंत्री ४) राज्य-सभा का अध्यक्ष ५) लोक-सभा का सभापति
५. संसार में सबसे बड़ा समुद्र कौन-सा है? दूसरा बड़ा समुद्र कौन-सा है? दोनों के आकार-प्रकार में क्या तुलना है?
६. 'वंदे मातरम' और 'जन गण मन' में क्या भेद है?
७. साहित्य पर किसे प्रथम नोबुल पुरस्कार प्राप्त हुआ है?
८. किस भाषा में अधिकतम आवधिक पत्रिकाएँ निकलती हैं? उस भाषा का नाम क्या है?
९. 'आधी रात का सूरज' के नाम से किस देश को पुकारते हैं?
१०. भारत के सबसे अधिक प्राचीन संगीत वाद्य का नाम क्या है?
११. ओलंपिक खेल कब-कब खेले जाते हैं?
१२. भारत के गुलाम राजवंश की स्थापना किसने की? वह किसका गुलाम था?
१३. संसार का सबसे अधिक चौड़ा प्रपात कौन-सा है?
१४. किसने पहले-पहल भारत में चल-चित्र बनाया? कब? उसका नाम क्या है?
१५. 'थायलंड' का पुराना नाम क्या है?
१६. बुद्ध का निर्वाण कब हुआ?
१७. संसार में सबसे बड़े हवाई अड्डे का नाम क्या है?

उत्तर

१. शुतुरमुर्ग
२. जनवरी २६, १९९०
३. अंग्रेजी, फ्रेंच, स्पानिश, इटालियन, रूसी
४. प्रधान मंत्री
५. पसिफ़िक और बाद अटलांटिक। अंटलांटिक समुद्र से पसिफ़िक समुद्र दो गुना बड़ा है।
६. प्रथम हमारे देश का राष्ट्रीय प्रार्थना गीत है। द्वितीय हमारे देश का राष्ट्रीय गीत है।
७. आर. एफ. ए सल्ली-पूद्होम
८. हिन्दी। ३,००० हज़ार से अधिक
९. नार्वे
१०. वीणा
११. चार वर्षों में एक बार
१२. कुतुबुद्दीन। गोरी मोहम्मद का गुलाम
१३. लाओस का खोन प्रपात। १०,८०० मीटर चौड़ा
१४. दादासाहेब फालके, १९१३, राजा हरिश्चंद्र
१५. सियाम
१६. ४४८ ई. पू
१७. किंग खलीद अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा। रियाध, सौदी अरेबिया

पुण्यवान्

शिव को अचानक पैसों की ज़रूरत आ पड़ी । जिन-जिन को वह जानता था, सब से माँगा, लेकिन किसी ने नहीं दिया । आखिर उसने रिश्तेदार केशव से सहायता माँगी । सब का कहना था कि वह अव्बल दर्जे का कंजूस है ।

केशव ने शिव से कहा "जान-बूझकर तुम जैसे को कैसे कर्ज़ दूँ? अगर दिया भी तो भला वह रकम कैसे लौटा सकोगे? मेरी बात सुनो । तुम श्रीपुर जाओ । वहाँ गुणाढ्य नामक एक पुण्यवान रहता है । कोई भी हो, उसपर दया करके वह कर्ज़ देता है । हो सकता है, उस धन से तुम्हारी दशा में भी सुधार हो ।"

शिव श्रीपुर गया और गुणाढ्य से मिला । उसने शिव से सारी बातों की जानकारी प्राप्त की । कुछ और सवाल भी किये और कहा "जब-जब ज़रूरत पड़ी, तब-तब तुम इस तरह कर्ज़ लेते रहोगे तो तुम्हारी कोई तरक्की नहीं होगी । तुम जैसे हो, वैसे ही रहोगे । तुम्हारे जवाबों से मुझे लगा कि तुममें व्यापार करने की योग्यता है । तुम्हें एक हज़ार अशर्फियाँ दूँगा ।इस धन से अपना व्यापार आरंभ करो । एक साल के अंदर तुम्हें अधिक लाभ हो तो मुझे दो हज़ार अशर्फियाँ लौटानी होंगी । मूलधन वापस देने में अगर दो साल लग जाएँ तो चार हज़ार अशर्फियाँ चुकानी होंगी । इस तरह हर साल दुगुना देते रहना होगा । क्या तुम्हें यह मंजूर है?"

उसे भला हज़ार अशर्फियाँ कर्ज़ में कौन देगा? इसलिए शिव ने गुणाढ्य की सारी शर्तें मान लीं । उस प्रकार शिव से उसने पत्र लिखवा कर दस्तख़त करवा लिये । फिर उसे एक हज़ार अशर्फियाँ दीं ।

मालूम नहीं, गुणाढ्य के धन में कैसी महिमा थी, एक ही साल केअंदर अपना खर्च

नरेंद्र

भी घटाने के बाद शिव ने पाँच हज़ार अशर्फ़ियाँ कमायीं। उनमें से दो हज़ार अशर्फ़ियाँ गुणाढ्य को देने की वह सोच रहा था कि इतने में एक व्यापारी आया और उससे बोला "अगर तुम्हारे पास पाँच हज़ार अशर्फ़ियाँ हों तो मुझसे हाथ मिलाओ। जिससे एक ही सालमें पचास हज़ार अशर्फ़ियों का फ़ायदा होगा, ऐसा व्यपार हम दोनों मिलकर करेंगे।"

व्यापारी के प्रस्ताव पर शिव सोच में पड़ गया। उसे लगा, अगर दो हज़ार अशर्फ़ियाँ मैं गुणाढ्य को दूँगा तो जो व्यापार मैं करना चाहता हूँ, उसमें मेरा फायदा कम हो जायेगा। जब पचास हज़ार कमा लूँगा तो चार हज़ार लौटाना मेरे लिए आसान होगा।

जिस व्यापारी ने नये व्यापार का प्रस्ताव रखा, उसे उसने पाँच हज़ार अशर्फ़ियाँ दीं। दोनों भागीदार बने। उनका व्यापार बड़े ज़ोरों से चलने लगा। गुणाढ्य को जो कर्ज़ लौटाना था, उससे भी अधिक मात्रा में बड़ी तेज़ी से उसका धन बढ़ने लगा। इसलिए वह गुणाढ्य को कर्ज़ चुकाना स्थगित करता गया।

पाँच सालों के अंदर शिव ने लाखों अशर्फ़ियाँ कमायीं।

गुणाढ्य को अब उसे देनी थी बत्तीस हज़ार अशर्फियाँ। एक ही किस्त में इतनी भारी रकम देने से उसका मन झिझक रहा था।

"एकहज़ार अशर्फियों का कर्ज़ देकर पाँच सालों में बत्तीस हज़ार अशर्फ़ियाँ लेनेवाला पुण्यवान् कैसे कहलाया जा सकता है? सच कहा जाए तो सहायता की आड़ में ग़रीबों को लूटनेवाला लुटेरा है गुणाढ्य।" मन ही मन ऐसा सोचकर शिव ने गुणाढ्य को कुछ नहीं चुकाया।

गुणाढ्य की बेटी की शादी पक्की हुई। गहने खरीदने के लिए वह शिव की दुकान में ही आया। चार हज़ार की कीमत का एक गहना खरीदा। एक हज़ार की कमी पड़ रही थी। शिव ने देखा कि हालत नाज़ुक है तो वह चुपके से वहाँ से सरक गया। लेकिन अपने कर्मचारी से यह कहकर गया कि गुणाढ्य से इज्ज़त से पेश आओ और अगर ज़रूरत पड़े तो विना पैसे लिये ही गहना धनाढ्य को दे दो।

कर्मचारी ने गुणाढ्य से कहा "महोदय, हमारे मालिक को किसी ज़रूरी काम पर अचानक बाहर जाना पड़ा ।यह गहना अपना समझिये और जो रक़म आप दे सकते हैं, देकर इसेले जाइये । यह हमारे मालिक का हुक़्म है ।"

गुणाढ्य हिचकिचाते हुए बोला "जो धन लाया था, सब खर्च हो गया ।और भी बहुत कुछ खरीदना है । गहने के लिए एक हज़ार अशर्फ़ियाँ आपको मुझे और देनी हैं । इसके लिए मुझे थोड़ी और अवधि चाहिये ।"

"जैसा आप चाहते हैं, कीजिये । हमारे मालिक आपके कर्ज़दार भी तो हैं ।" विनयपूर्वक कर्मचारी ने कहा ।

"वह अलग बात है । उसके लिए मैं ब्याज वसूल करूँगा । कर्ज़ चुकाने में जितनी देरी होगी, उतना ही फ़ायदा होगा मुझे । लेकिन हाँ, मैं इसके लिए ब्याज नहीं दूँगा" गुणाढ्य ने कहा ।

कर्मचारी ने उसकी सारी शर्तें मान लीं । उससे तीन हज़ार अशर्फ़ियाँ लीं और गहना दे दिया । शिव जब लौटा, तब उसे सब कुछ बताया ।

यह सुनकर शिव ने सोचा, लगता है, गुणाढ्य को जो रकम चुकानी है, उसमें से मूलधन वसूल करने के लिए आया है । सब नाटक कर रहा है । क्या एक हज़ार अशर्फ़ियाँ ही कम पड़ गयीं?

इस घटना के दूसरे ही दिन दिल का दौरा पड़ने की वजह से गुणाढ्य मर गया ।शिव इसपर मन ही मन बहुत खुश हुआ । सोचा "अब मुझे इस बात की भी चिंता नहीं होनी

कैसी प्रशंसा कर रहे हैं ।" उसकी नज़र में वे सब लोग बेवकूफ़ और नासमझ थे ।

गुणाढ्य के ज्येष्ठ पुत्र ने तब सबसे कहा "हमारे पिताजी ने बहुतों की मदद की है । कुछ लोगों को कर्ज़ भी दिया है ।सुना है कि तत्संबंधी पूरा विवरण उन्होंने किताब में लिखकर रखा है। उसी में उनका वसीयतनामा भी है ।मालूम नहीं, कहाँ रखी है? ढूँढ़ने पर भी नहीं मिल रहा है ।

श्रीपुर के ग्रामाधिकारी ने तब उससे कहा "मुझे मालूम है कि वह किताब और वसीयतनामा उन्होने अवश्य ही अपनी अलमारी के गुप्त तह में महफ़ूज़ रखे होंगे । मैं तुम्हें वह तह दिखाऊँगा" । परंतु उन्होने सलाह दी कि चूँकि आज का दिन शुभ दिन नहीं है, इसलिए यह काम कल करें तो अच्छा होगा । यों वह काम दूसरे दिन के लिए मुल्तवी किया गया ।
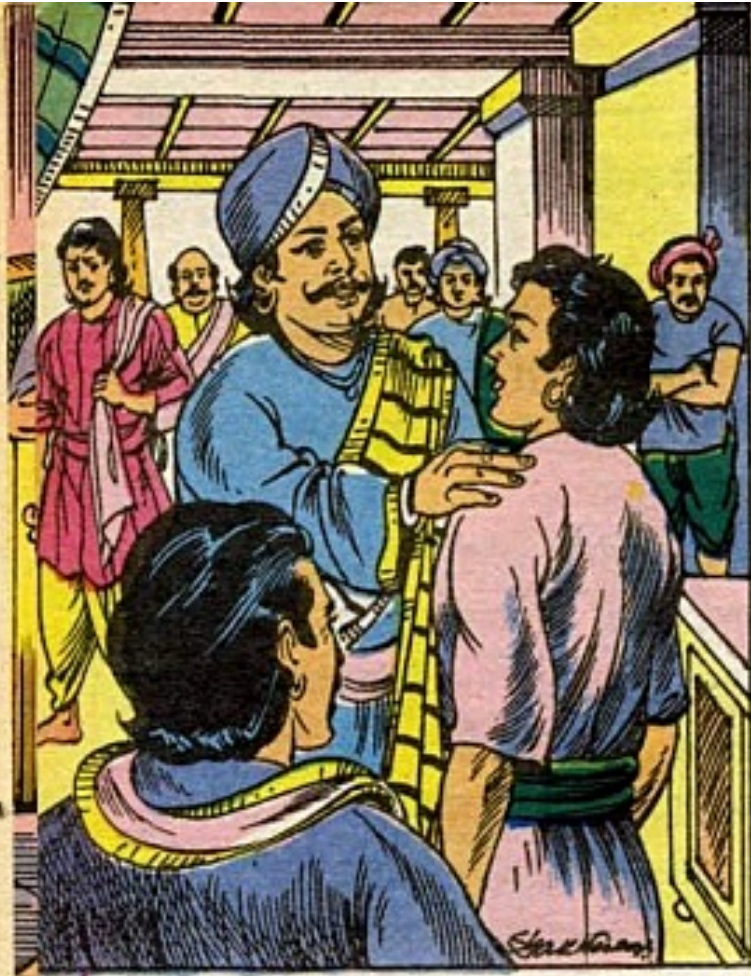
चाहिये कि मैंने उसे कुछ नहीं दिया । क्योंकि हज़ार अशर्फ़ियाँ दो दिन पहले ही उसे दिया और इतना देना ही न्यायसंगत है ।"

गुणाढ्य की अंत्यक्रियाओं केबाद, आसपास के सब प्रमुख लोगों को भोज के लिए बुलाया गुणाढ्य के ज्येष्ठ पुत्र ने । शिव भी गया । वहाँ उपस्थित सब लोग गुणाढ्य की प्रशंसा करते हुए कह रहे थे कि वह निस्वार्थी है, महान पुण्यवान् है । इसी वजह से उसकी अनायास मृत्यु हुई है । उसे अवश्य ही स्वर्ग प्राप्त होगा ।यह सब सुनते हुए शिव मन ही मन हँसते हुए आप ही आप कहने लगा "धन इकट्ठा करने की लालच में वह सब लोगों को कर्ज़ देता था और तगड़ी सूद वसूल करता था। ऐसे कंजूस की ये लोग

जैसे ही शिव ने यह सुना तो उसे लगा मानों उसके सिर पर पहाड़ टूट पड़ा हो । वह किताब मिल गयी तो बहुत ही बड़ी भारी रक़म गुणाढ्य के परिवार को देनी पड़ेगी ।

शिव के साथ-साथ वहाँ चार-पाँच ऐसेही कर्ज़दार मौजूद थे । उनमें से एक को लाख से भी अधिक अशर्फ़ियाँ गुणाढ्य को देनी थीं ।

वे पाँचों व्यापारी एक जगह मिले । उन्होने एक योजना बनायी । एक आदमी को तैनात किया, जो रात को गुणाढ्य के

घर जायेगा और उसके पुत्र को ड़रा-धमकाकर वह किताब ले आयेगा, जिसमें पूरा हिसाव दर्ज किया हुआ है । वह आदमी अपने काम में कामयाब हुआ । पुस्तक ले आया और भारी पुरस्कार पाकर चला गया ।

उन पाँचों ने सोचा कि किताब जला दी जाए । लेकिन वे यह बात जानने उत्सुक थे कि आखिर उसमें लिखा क्या गया है? उसमें उनके कर्ज़ों का जिक्र है कि नहीं? उन्होने वह पुस्तक खोली तो उसमें यों था ।

"मैं साधारण लोगों को कर्ज़ के नाम पर धन देता रहता हूँ । अगर कहूँ कि दान दे रहा हूँ तो मुझे डर है कि ऐसे भी लोग आ जाएँगे, जिनको कर्ज़ की ज़रूरत ही नहीं है । धन के साथ मैं उन कर्ज़दारों को उचित सलाहें भी देता रहता हूँ । मेरे धन और मेरी सलाहों से बहुत-से लागों की भलाई हुई है । अगर वे धन लौटाएँ तो उसका उपयोग मैं पुण्य–कार्यों में करता हूँ । उसमें से एक दमड़ी भी अपने लिए इस्तेमाल में नहीं लाता । उनसे लिखवाकर जो पत्र लेता हूँ, उनके चले जाते ही उसे फाड़ देता हूँ । मेरा ज्येष्ठ पुत्र भी इसी पद्धति में अपना जीवन बिताये तो मेरी आत्मा संतुष्ट होगी ।"

यह पढ़ते ही व्यापारी हक्के-बक्के रह गये ।उनके चेहरे फ़ीके पड़ गये ।

इसके बाद उस हिसाब की भी पट्टी थी, जिसमें स्वयं जो कर्ज़ चुकाना था, उसके विवरण दर्ज थे । शिव को जो हज़ार अशर्फियाँ चुकानी थीं, उसका भी ज़िक्र उसने किया गया था । यह सब कुछ लिखने के बाद ही वह मर गया ।

शिव और अन्य व्यापारियों की समझ में अब आया कि गुणाढ्य को लोग क्यों पुण्यवान कहते और मानते हैं । उन्होने उस पुस्तक को फिर से गुणाढ्य की अलमारी में चुपचाप रखवा दिया । उनको जो रकम चुकानी थी, पूरी की पूरी गुणाढ्य के पुत्र को चुका दी ।

इसके बाद गुणाढ्य के ज्येष्ठ पुत्र के साथ-साथ शिव भी उसके दिखाये हुए मार्ग पर ही चलने लगा ।
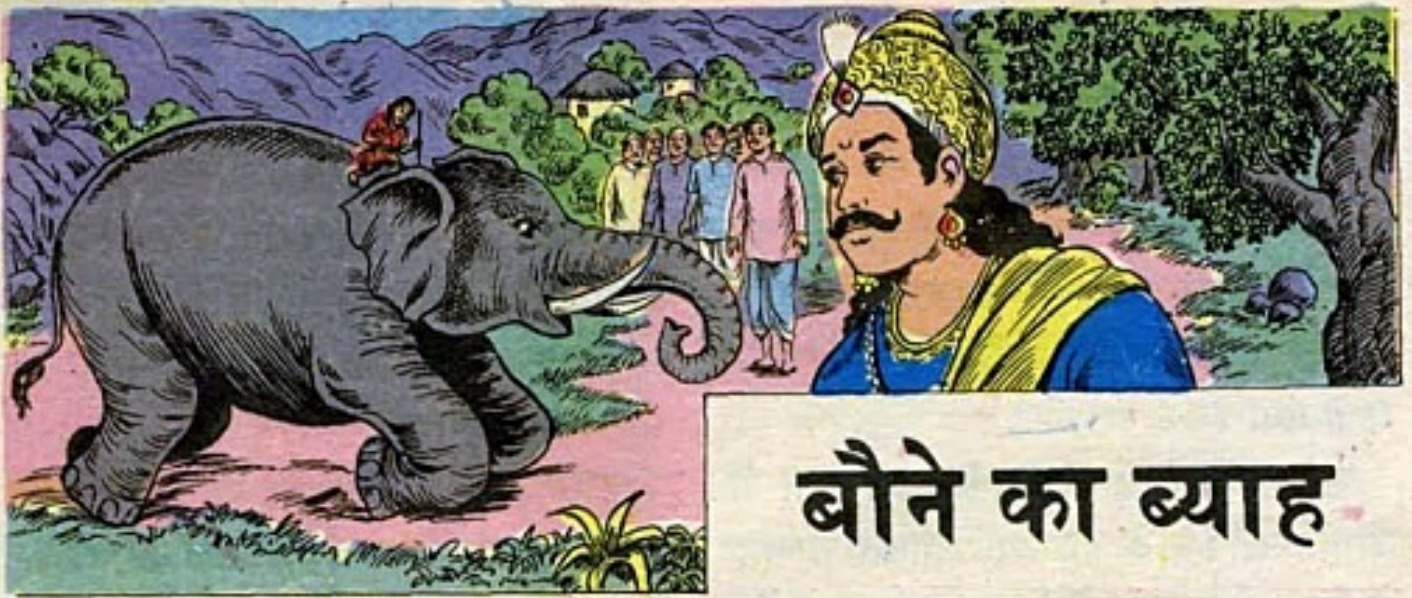
बौने का ब्याह

बेलापूर नामक गाँव में चरिया नाम का एक बौना रहता था। वह बहुत ही नाटा था। देखने में भी बदसूरत था। लेकिन किसी भी प्रकार के हाथी को यों वश में कर लेता था। जो व्यापारी महाराज को हाथी बेचा करते थे, उन्हें उससे बड़ी मदद मिलती थी।

महाराज ने स्वयं एक बार उसका कौशल देखा और बहुत ही खुश हुआ। उसने कहा "मेरे देश के बेलापुर जैसे एक कुग्राम में तुमने जन्म लिया है। मुझे इस बात का गर्व है कि तुम मेरे देश के एक नागरिक हो। शापग्रस्त महाराज नल की तरह तुममें भी अद्‌भुत कला विद्यमान है। सब प्रकार से तुम मेरे दरबार में रहने की योग्यता रखते हो। मेरी गजशाला के पर्यवेक्षण का भार तुम्हें सौंपता हूँ।"

बस, बौना चरिया महाराज के हाथियों की देख-भाल करनेवाला प्रधान अधिकारी बन गया। अब उसको किसी बात की कमी नहीं। बहुत से नौकर अब उसके अधीन काम करते थे। वे उससे बड़ी इज़्ज़त के साथ पेश आते थे। इतना होते हुए भी अपने क़द पर उसे सदा रंज हुआ करता था। अपने ही आप घुलता रहता था।

महाराज ने देखा कि वह हमेशा ढ़ीला और निरुत्साह से भरा हुआ दीखता है। उसने बौने से पूछा "दरबार में तुम ऊँचे पद पर हो। हाथियों पर काबू पाने के तुम्हारे सामर्थ्य को देखकर सब लोग चकित हो रहे हैं। फिर भी तुम चुस्त और संतुष्ट नहीं दीखते। मेरा विचार है कि तुम्हें जीवन में एक साथी चाहिये। जल्दी शादी कर लो"।

बौना ज़बरदस्ती हँसता हुआ बोला "महाराज, आपकी उदारता के कारण मुझे अच्छी नौकरी मिल गयी है।" एक क्षण रुक गया और बोला "क्षमा कीजिये। मुझे

राम नारायण

शादी करने की सलाह देकर आप मेरा मज़ाक उड़ा रहे हैं, ऐसा आपसे कहने का मुझमें साहस नहीं ।"

बौने की बात पर राजा दुखी होता हुआ बोला "मैने तुम्हारा मज़ाक नहीं उड़ाया है । हर प्राणी को एक साथी की सख्त ज़रूरत है । तुम्हारी शादी मैं किसी सुँदर लड़की से करवाऊँगा ।"

बौने ने राजा को प्रणाम किया और मौन रह गया । बौने की शादी के बारे में राजा सोच में पड़ गया । सच कहा जाए तो उसका आकार देखकर शादी करने के लिए जो लड़की तैय्यार होगी, अवश्य ही उसमें बड़े ही त्याग की भावना होनी चाहिये । राजा ने सोच-विचार कर घोषणा करवायी कि जो लड़की बौने से शादी करेगी, उसके पिता को महाराज, जहाँ वह चाहे, वहाँ ज़मीन, घर और धन देंगे ।

आखिर राजा ने तीन लड़कियों को चुना । उनमें से दो लड़कियों की सुँदरता साधारण थी। तीसरी लड़की चरिया की तरह बौनी थी ।

राजा ने तीनों को अलग-अलग बुलाया और पूछा "मैं राजा हूँ । इसलिए आपको ज़रा भी ड़रने की ज़रूरत नहीं । निर्भीक होकर अपने विचार व्यक्त कीजिये ।"

पहली लड़की ने कहा "महाराज, मेरी सौतेली माता मुझे बहुत बुरी तरह से सताती रहती है । मेरे पिता उसके गुलाम हैं । वह एक बूढ़े से मेरी शादी कराने की कोशिश में लगी हुई है । आपकी घोषणा ने उसमें

आशा जगा दी । उसे लगा, मानों भगवान ने उसपर खुश होकर उसे वर प्रदान किया हो । कुछ भी हो, राजा की आज्ञा का पालन करने के लिए मैं तैयार हूँ ।"

'अगर मैं तुम्हारे लिए किसी अच्छे दुल्हे को चुनूँगा तो क्या तुम उस बौने से शादी नहीं करोगी" राजा ने पूछा ।

बड़ी विरक्ति से उस लड़की ने कहा "मैं राजा की आज्ञा का पालन करूँगी । निर्णय आपके हाथ में है ।"

अब रही दूसरी लड़की की बात । उसका बाप बहुत ही ग़रीब है । इस लड़की के बाद दो और लड़कियाँ हैं, जिनकी शादी होनी है । उस लड़की ने राजा से बताया कि बौने से मेरी शादी हो जाए तो मेरे परिवार

के सदस्य सुखी रह सकेंगे । उसने राजा से विनती भी कि मेरे पिता को ज़्यादा से ज़्यादा धन दिलाइयेगा ।

राजा ने बौनी लड़की से कहा "मैं जो चाहूँ, कर सकता हूँ । चाहूँ तो बौने की शादी एक सुँदर लड़की से करवा सकता हूँ । देश के सब सुन्दर युवकों को बुलवा सकता हूँ और जिस युवक को तुम चाहोगी, उससे तुम्हारा विवाह भी बड़े बैभव से करा सकता हूँ । मैं नहीं चाहता कि चरिया जैसे एक बौने से तुम्हारी शादी हो । तुम तो जानती हो कि सुँदरता के आगे अच्छाई, अक़्लमंदी और कौशल आदि का कोई मूल्य ही नहीं ।"

बौनी लड़की ने झुककर अपने बौने हाथों से राज़ा को प्रणाम किया और कहा "राजन्, अपनी आज्ञा से कामदेव जैसे एक सुँदर मानव से आप मेरी शादी तो करा सकते हैं लेकिन आप हमारे दिलों को नहीं मिला सकते हैंना? ओहदे की दृष्टि से मैं तो चरिया की योग्य पत्नी नहीं हूँ, फिर भी मैं उनका पूरा ख्याल रखूँगी । उनकी इच्छाओं के मुताबिक़ चलूँगी । धर्मपत्नी कहलाने का पूरा प्रयास करूँगी ।"

बौनी लड़की की बातों से राजा बहुत खुश हुआ । दूसरे दिन उसने चरिया को बुलाया और कहा "जो लड़की तुम्हारे ओहदे को प्रधानता देती है, जिसकी दृष्टि में तुम्हारा बौनापन भी उसके सम्मुख भुलाया जा सकता है, क्या वह लड़की तुम्हें पसंद है? लेकिन मेरी इच्छा तो तुम्हारी शादी उस बौनी लड़की से करने की है क्योंकि वह तुम्हारे विचारों का आदर करेगी और तुम्हारे कहे अनुसार चलेगी । सच्चे अर्थों में वह जीवन-सँगिनी बनेगी । अगर उससे शादी करना तुम नहीं चाहते हो तो बाकी दोनों लड़कियों में से किसी एक लड़की से तुम निधड़क शादी कर सकते हो ।"

बौने ने बिना हिचकिचाये बौनी लड़की से ही शादी करने की अपनी इच्छा व्यक्त की । राजा ने धूमधाम से उनकी शादी करवायी । उन्होंने दोनों लड़कियों की शादी भी योग्य युवकों से करवायी ।

अंजना देवी ने आगत अतिथियों का सत्कार बहुत बड़े स्तर पर किया। भोज के उपरांत राम के साथ आये हुए सब लोग अयोध्या लौटने लगे।

राह में सीता ने यशोधरा से कहा "देखा, मैने तो पहले ही कहा था ना कि तुम्हारे पति पर कोई विपदा नहीं आयेगी, भयभीत होने की कोई आवश्यकता नहीं है। हनुमान की शरण में जाने से ययाति का जीवन चरितार्थ हुआ।"

यशोधरा कृतज्ञता व्यक्त करती हुई बोली "सब कुछ सीता-राम की कृपा ही तो है। हनुमान के हृदय में राम के साथ तुम्हें भी हम सबने देखा है। हमारी आँखें धन्य हो गयी हैं।"

"हाँ, देवी सीता, हमने भी आपको देखा है" ताली बजाते हुए बहुत ही प्रसन्न मुद्रा में चंद्रांगद तथा चंद्रमुखी ने कहा। यशोधरा ने उन्हें चुप होने का संकेत दिया। उसने देखा कि सीता उन बच्चों को ममता-भरी आँखों से निहारती जा रही है तो उसने कहा "देवी, बहुत ही शीघ्र तुम माँ बनोगी। तुम्हारे मुख-मंडल पर मातृत्व झलक रहा है।"

सीता लज्जित होती हुई मुस्कुराती बोली "आयु में मुझसे कम उम्र की लगती हो तुम। परंतु ऐसे रत्नों को जन्म देने के कारण तुम्हीं मुझसे उत्तम हो। बड़ी भाग्यवती हो। तुम्हारे वचन मेरे लिए आशीर्वाद हैं।"

इस प्रकार वे पालकी में बैठी वार्तालाप

में मग्न होती हुई अयोध्या पहुँचीं । ययाति ने सपरिवार राम का आतिथ्य स्वीकार किया ।सीता यशोधरा से बड़े उल्लास से बातें करती रहती थी । उसके शिशुओं के संग खेलती-कूदती थी और अपने मन की इच्छाओं की पूर्ति करती थी । दोनों बच्चे माँ, माँ कह कर उसके आगे-पीछे घूमते रहते थे तो वह आनंद से तन्मय हो जाती थी ।

कुछ दिनों के बाद राम की अनुमति पाकर ययाति और यशोधरा अपने बच्चों के साथ अपने राज्य लौटे ।

पूर्णिमा के दिन राम सीता के साथ अंत:पुर के उद्यान में विचर रहा था । तभी चंद्रोदय हो रहा था । राम ने उसे दिखाते हुए कहा "उधर देखना ।"

सीता भावुक होती हुई बोली "पूर्वी दिशा नामक कौसल्यादेवी के यहाँ रामचंद्र का उदय हो रहा है ।"

राम ने कहा "नहीं, सीता देवी के यहाँ भी ऐसा ही चंद्रोदय निकट भविष्य में होनेवाला है । यह भविष्यवाणी कर रही है पूर्वी दिशा ।"

"यह भी बता रही है ना कि वह चंद्र रामचंद्र के जैसे ही होगा" सीता ने कहा ।

राम ने मंद मुस्कान भरते हुए कहा "वह चंद्र जानकी देवी के मानिंद होगा ।"

दोनों आनंद से हँसते रहे । जहाँ वे आसीन थे, उसके पीछे ही एक छोटे-से सरोवर में कमल की दो कलियाँ विकसित हो रही थीं । देखने में वे बहुत ही सुँदर थीं । उनको देखते हुए वे थोड़ी देर वहीं बैठे रहे और फिर दोनों अंत:पुर में चले गये । थोड़ी अवधि के उपरांत सीता बाहर आयी और ऊपर से उद्यान को देखती रही । पूर्णिमा की कांति बिखरी पड़ी थी । उस सरोवर में भी चाँदिनी झूल रही थी । उस प्रशांत वातावरण में वे दो कलियाँ दो नक्षत्रों से लग रहे थे ।

गंधमादन पर्वत पर हनुमान जप-तप में मग्न था । उसे ज्ञात भी नहीं हुआ कि कितने वर्ष बीत गये । एक दिन अयोध्या से राम का एक निकट सेवक, वयोवृद्ध भद्र उसके पास आया और बोला" राम ने तुम्हें तक्षण ही बुलाया है ।"

भद्र बहुत ही चिंतित दीख रहा था । हनुमान ने उससे प्रश्न किया "क्या हुआहै?

अयोध्या के विशेष समाचार क्या हैं?"

भद्र ने दीर्घ श्वास लिया और कहा "सब कुछ समाप्त हो गया ।"

"क्या कहना चाहते हो? स्पष्ट बताओ" हनुमान ने कहा । "सुनो, तुम्हें संक्षेप में बताता हूँ ।" और भद्र ने यों कहा ।

एक दिन ऋषियों को अपने साथ लेकर ब्राह्मणों का एक समूह राम के पास आया । उन्होने राम से कहा "शंबुक नामक एक शूद्र ने वेदों का अध्ययन किया है । एक शूद्र का वेदों का अध्ययन करना धार्मिक नियमों के अनुसार बर्जित है ।उसने घोर तपस्या भी की है । इस कारण धर्म की क्षति हुई है । इसी कारण अपने एक बालत की भी असमेय मृत्यु हुई है ।"उन्होने राम को आज्ञा देते हुए कहा "तुम तक्षण ही शंबुक का बध करो ।"

राम किसी भी वर्ग के व्यक्ति को दुखी नहीं करता, यह उसका सिद्धांत है । अतः ब्राह्मणों की आज्ञा के अनुसार उसने उस शंबुक का बध कर दिया, जो साधु जीवन बिताते हुए तपस्या कर रहा था । तब शंबुक की पत्नी कपिला ने क्रोध से कहा" राजन, तुम्हारा अनर्थ होनेवाला है । तुमने यह जो दारुण हत्या की है, यह, उसी का सूचक है ।" राम को सावधान करती हुई उसने प्राण छोड़ दिया ।

इस घटना के चंद दिनों के बाद एक दिन रात को भद्र के साथ राम गुप्त रूप से गलियों में जा रहा था । घूमते-घूमते अयोध्या के कोने में धोबियों की जो बस्ती थी, वहाँ गया । वहाँ उसने देखा कि पति-पत्नी आपस में झगड़ रहे हैं । धोबी की पत्नी कहीं जाकर थोड़े-दिन रहकर आयी है, इसपर क्रोधित धोबी ने उसे खूब पीटा और उसे घर के अंदर आने नहीं दिया । रक्त-सिक्त अपनी पीठ दिखाती हुई धोबिन ज़ोर-ज़ोर से विलाप करती हुई बोली "सीता को राम जैसे महाराज ने भी स्वीकार किया । आखिर तुम और तुम्हारी हस्ती ही क्या है? "शराब में धुत उस धोबी ने उसके उत्तर में बड़ी कठोरता से सब के सामने कहा " राम को राजा होने का अहंकार है । उसने सोचा होगा कि मुझसे प्रश्न कौन करेगा? कितने ही साल लंका में एक पराये पुरुष के यहाँ रही सीता ।राम ऐसी स्त्री को अपनाकर आनंद

से झूम रहा है । मैं उसकी तरह निर्लज्ज नहीं कि तुम्हें अपनाऊँ । तुम्हारे लिए इस घर के द्वार सदा के लिए बंद हैं ।"

सब जानते हैं कि राम धर्म—परायण है । आदर्श राजा है, जनता का सच्चा सेवक है । वह कोई भी ऐसा कार्य नहीं करेगा, जो जनता के हितों के विरुध्द हो । अपनी प्रजा को हर स्थिति में वह आंनद में देखना चाहता है । इस बात का उसे सदा ध्यान रहता है कि स्वयं मुझसे कोई तृटि ना हो । किसी को उसकी ओर उँगली उठाकर दिखाने का अवसर ही देना नहीं चाहता । लेकिन धोबी के कटुबचनों से वह विचलित हो गया । उसने यह भी नहीं सोचा कि एक सामान्य धोबी शराब की धुत में अंटसंट बक रहा है । उसको लगा कि एक नागरिक ने उसकी बलहीनता की ओर इंगित किया है ।

धोबी की इन बातों में वास्तविकता है, परंतु सच्चाई नहीं । क्योंकि रावण का वध करने के बाद जनता की सम्मति पाने के लिए उसने सीता से अपने पातिव्रत्य की परीक्षा देने का अनुरोध किया । सीता को राम की इस आज्ञा पर दुख तो अवश्य हुआ, लेकिन अपने पातिव्रत्य की परीक्षा उसने अग्नि—प्रवेश करके दी । अग्नि ने स्वयं घोषणा की कि सीता महा पतिव्रता है, निष्कलंक है । अब राम संतृप्त हुआ । वह स्वयं जानता था कि सीता पतिव्रता है, परंतु लोक को जताने के लिये ही ऐसा करने पर बाध्य हुआ । उस क्षण स्वर्ग से आकर पिताश्री दशरथ भी स्वयं प्रत्यक्ष हुए और सीता के निष्कलंक चरित्र की भरपूर प्रशंसा की ।

एक नागरिक के कटु वचनों से, चाहे वह साधारण नागरिक ही क्यों ना हो, उसका मन घायल हुआ । बड़े ही मानसिक संघर्ष और क्षोभ के बाद धर्म की संस्थापना के लिए वह एक निर्णय पर आया ।

फलस्वरूप सीता को वन में छोड़ आने की आज्ञा राम ने लक्ष्मण को दी । उस समय सीता गर्भवती थी ।इसके पिछले दिन ही राम से सीता ने कहा कि मैं मुनियों के आश्रमों में जाकर मुनि-पत्नियों से मिलना चाहती हूँ और कुछ दिन वहाँ बिताना चाहती हूँ । इस बहाने राम ने सीता को बन भेजा । अपने अग्रज की आज्ञा के अनुसार लक्ष्मण

सीता को बन में छोड़ आया ।

सीता का त्याग करके रामचंद्र ने निद्रा और आहार का नाम भी नहीं लिया । राम की स्थिति बड़ी ही चिंताजनक थी । अपने प्रभू की स्थिति भद्र से देखी नहीं गयी । वह बचपन में राम को गोद में लेकर घुमाता था; उसका लालन-पालन करता था । रूठता तो मनाता था ।उसके साथ खेलता-कूदता था ।राम जब चंदामामा को देखकर हठ करता था कि मुझे चंदामामा चाहिये तो भद्र झट से आइना लाकर उसके हाथ में दे देता था । अपने को और चंद्र को आइने में देखकर राम तुतलाते हुए प्यार से बोलता था राम-चंद्र । तब भद्र अपना मुखड़ा राम के बग़ल में रख देता और पूछता कि अब बोलो तो वह राम-भद्र कहकर बड़े प्यार से बोलता था । तभी से राम के नाम हुए रामचंद्र, रामभद्र । राम के प्रति भद्र का प्यार वर्णनातीत है । वह उस धोबी के टुकडे-टुकड़े कर देना चाहता था । धोबियों की बस्ती में जाकर उसने उस धोबी के बारे में जानकारी भी प्राप्त की । तब वहाँ के लोगों ने बताया "इतना बड़ा झूठ उसने बक दिया । हम ही उसको मारना चाहते थे, लेकिन वह पकड़ में नहीं आया । मालूम नहीं, कहाँ भाग गया । उसकी पत्नी भी दिखायी नहीं दे रही है ।"

लक्ष्मण ने सीता को वन में छोड़ दिया । सीता बहुत ही दुखी हुई । पहाड़ के चट्टान से नदी के प्रवाह में कूदकर अपना प्राण त्यागने ही वाली ही थीं कि ऋषि वाल्मीकि ने उसे बचा लिया । वह उसे अपने आश्रम में ले गया । सीता ने जुड़वें बच्चों को जन्म दिया । वाल्मीकी ने उनके नाम रखे-कुश, लब । उन्हें अनेकों प्रकार की विद्याएँ सिखायीं । स्वरचित रामायण की कथा को गीत के रूप में गाने की शिक्षा भी दी । सीता ने उन्हें धनुर्विद्या सिखायी ।

एक दिन कुश लव रामायण के राम का दर्शन करने और अपनी माँ के ही नाम की सीता को देखने बड़ी उत्सुकता से रामकथा का गायन करते हुए अयोध्या आये ।

वशिष्ट जैसे ज्ञानी व तपस्वी चाहते थे कि राम सीता को किसी तरह भुलाये ।इसलिए उन्होने राम को आदेश दिया कि जैसे रघुवंश के राजा लोककल्याण

पुरप्रमुखों आदियों की आँखों से आँसू बह बड़े। उन सबने सीता की मूर्ति को प्रणाम किया। राम समझता था कि ये मुनिवालक हैं। उसने बड़े प्यार से उन्हें अपने पास बिठाया और चूमा। मूल्यवान पुरस्कार प्रदान किये और बिदा किया।

याग के प्रारंभ की क्रियाओं की समाप्ति के बाद रघुवंश का चिन्ह सूर्य का ध्वज अश्व पर अलंकृत किया गया और उसे स्वच्छंदता से जाने के लिए छोड़ दिया गया। वह घोड़ा दौड़ता हुआ सीधे वाल्मीकि के आश्रम के निकट पहुँचा। घोड़े के माथे पर जो पट्टी बंधी हुई थी, उससे कुश लव को ज्ञात हो गया कि यह राम का घोड़ा है। उन्होने उसे बाँध दिया।

के लिए अश्वमेध याग करते आये हैं, उसी तरह तुम भी याग करो। सीता की सोने की मूर्ति को बग़ल में रखकर राम ने यज्ञ का आरंभ किया। उसी दिन अपने को मुनि बालक कहते हुए कुश लव ने नगर में प्रवेश किया। वे गलियों में रामायण गाते हुए जाने लगे। लक्ष्मण को उन्हें देखकर आश्चर्य हुआ। उसने अनुमान लगाया कि ये कौन होंगें? उन्हें वह राजमंदिर में ले गया।

कुश लव ने राजप्रासाद में सीता के अग्नि-प्रवेश की घटना गाकर सुनायी। उनके गायन से प्रतीत होता था मानों वह घटना सबकी आँखों के सम्मुख ही घट रही हो। वहाँ उपस्थित कौसल्या, सुमित्रा आदि अंतःपुर की स्त्रीयों, याग करते हुए मुनिवरों,

शत्रुघ्न, भरत, लक्ष्मण आदि घोड़े को छुड़ाने गये। कुश लव से युद्ध करते-करते वे सब वेहोश हो गये। राम ने जाकर उनसे युद्ध किया।

कुश लव यह कहते हुए राम पर बाण छोड़ने लगे कि हमारी माता सीता पवित्र है। उन बाणों से राम भी बेहोश हो गया। सीता आयी और राम के चरणों का स्पर्श किया। तब जाकर राम होश में आया।

वाल्मीकी ने राम से अनुरोध किया कि सीता पवित्र है ;अपने साथ उसे अयोध्या ले जाओ।

तब राम ने कहा "सीता अपनी पवित्रता की शपथ खाये और पुरजनों की सम्मति पाये तो अच्छा होगा।"
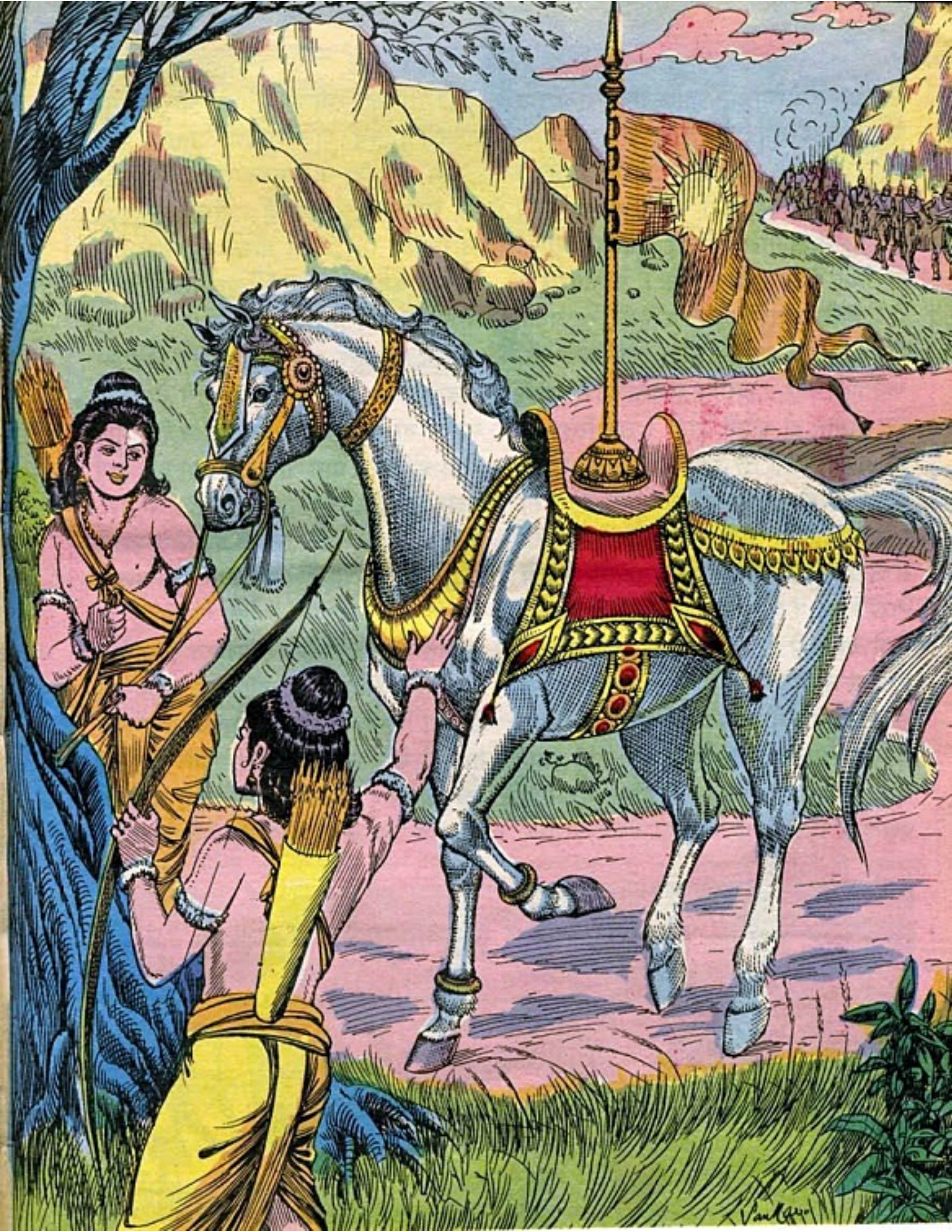
सीता अयोध्या आयी और अपने दोनों पुत्रों को राम के सुपुर्द किया । फिर भूदेवी से कहा "हे माते, मेरी पवित्रता को प्रमाणित करने मुझे स्वीकार करो ।" उसके यह कहते ही समस्त दिशाओं में घोर अंधकार व्याप्त हो गया । बिजली कड़की । मेघ गरजे । सब अयोध्यावासी अपने घरों से निकलकर दौड़े हुए वहाँ आये । सीता जहाँ खड़ी थी, वहाँ भूमि फटी । उसमें से रत्नखचित सिंहासन पर आसीन हो भूदेवी आयी । उस सिंहासन को नागकन्याएँ ढो रही थीं । जिस प्रकार माता अपनी संतान को अपनाती है, उसी प्रकार भूदेवी ने सीता को अपने दोनों हाथों से उठाया और सिहासन पर अपनी गोद में बिठा लिया । भूमि में फिर से कंपन हुआ । अयोध्यानगरी हिली, लेकिन घर का एक खपरैल भी नीचे नहीं गिरा । सीता के साथ भूदेवी पाताल में चली गयी । भूमि अब जुड़ गयी । लगता ही नहीं था कि वहाँ खाई थी । यह सब क्षण भर में हआ और सब देखते ही रह गये ।

क्रोधित हो राम में भूमि को चीरने धनुष टंकारा । तब आकाशवाणी सुनायी पड़ी, "राम, रघुवंश के समस्त राजाओं ने भूमि पर सुशासन चलाया है । तुम्हीं ने शपथ दिलवाकर उसे अपने मायके में भेजा है । तो फिर यह क्रोध कैसा?" अब राम ने धनुष नीचे उतारा । सिर झुका लिया ।

राम ने कुश लव को युवराज बनाकर सिंहासन पर बिठाया । अब उसे देखने से लगता था मानों वह विषाद की सजीव मूर्ति हो । अश्वमेध याग चालू है । राम का अश्व उत्तर से पूर्व की तरफ़ जा रहा है । लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न आदि सेनाओं को लिये उसके साथ-साथ जा रहे हैं । यों भद्र ने पूरा वृत्तांत सुनाया ।

प्रतिमा की तरह स्थिर हनुमान आँसू बहा रहा था । आँसुओं को पोंछकर उसने भद्र से कहा "अभी मैं राम के पास जा रहा हूँ । तुम भी मेरे साथ आओ ।" गदा भुजा पर रख ली और आकाश में उड़कर अयोध्या पहुँचा ।

जायदाद, जो कभी ना घटे

विजयपुरी नामक गाँव में रामदास एक कुली था । उसकी आमदनी बिलकुल ही कम थी । उससे उसका पेट भी भर नहीं पाता था । कभी–कभी तो उसके परिवार को उपवास रखना पड़ता था ।

शिवदास रामदास का इकलौता बेटा था । बचपन से ही वह माता–पिता के कष्टों को देखते आ रहा था । मज़दूरी के लिये उनसे की जानेवली मेहनत को देखकर उसके दिल में एक इच्छा ने घर कर लिया । उसकी तीव्र इच्छा थी कि बड़े हो जाने के बाद मै इतनी जायदाद कमाऊँ, जो कभी ना घटे । जिससे वह सुख–चैन से ज़िन्दगी गुज़ार सके ।

पंद्रहवें साल तक वह कामों में माँ–बाप का साथ देता रहा । अचानक उसकी माँ बीमार पड़ गयी और एक सप्ताह के अंदर मर भी गयी । गाँवालों ने कहा कि सही इलाज होता तो वह अवश्य बच जाती । शिवदास को लगा कि ग़रीबी की वजह से ही वह अपनी माँ को बचा नहीं पाया । उसकी दृष्टि में ग़रीबी एक शाप है । ऐसे शापग्रस्त आदमी को जीवन में चैन नहीं मिलता । उसके लिए जीवन एक दंड है । उसने निश्चय किया कि मैं ऐसा नहीं भुगतुँगा । इसलिए उसकी इच्छा तीव्रतर होती गयी कि मैं इतनी जायदाद कमाऊँ, जो कभी ना घटे ।

इसके दो साल बाद उसका पिता रामदास मर गया । पिता की मौत से शिवदास घबड़ा गया । उसके दुख की सीमा ना रही । उसे लगा कि यह सब धन के अभाव के कारण ही हो रहा है । धन होता तो ना माँ मरती और ना ही पिता । उसे भविष्य सूना–सूना दीखने लगा । उस हालात में गाँव के मुखिया भूषण ने उसे बुलाया और कहा "शिव, तुम्हारा पिता नहीं चाहता था कि तुम आगे जाकर तक़लीफ़ें झेलो । उसने मेरे पास सौ

कुसुम अहुजा

अशर्फ़ियाँ दे रखी हैं । वह धन मैं तुम्हें सौपूँगा । बोलो, इस धन से तुम क्या करना चाहते हो?"

यह बात सुनकर शिवदास की जान में जान आयी । उसने भूषण को अपने मन की इच्छा प्रकट की, जिसका सपना वह बहुत दिनों से देख रहा था ।

भूषण मुस्कुराता हुआ बोला "पहले कभी ना घटनेवाली उस जायदाद की बात को ताक़ में रख । ये सौ अशर्फ़ियाँ जब एक हज़ार अशर्फ़ियाँ बनेंगीं, तब मुझसे आकर मिलना" ।

शिवदास ने उन सौ अशर्फियों से मुर्गियों का व्यापार शुरू किया । कुछ ही दिनों में उन्होंने अंड़े भी दिये । आरंभ में व्यापार में फ़ायदा हुआ । लेकिन किसी बीमारी की वजह से मुर्गियाँ मर गयी इतनीं मेहनत करने के बाद भी सौ अशर्फ़ियों को दो सौ अशर्फियाँ बनाने में वह सफल हुआ ।

शिवदास ने उन दो सौ अशर्फ़ियों से दस बकरियाँ ख़रीदीं । उनमें से दो बकरियों को भेड़ियों ने खा लिया । चार बकरियों को चोरों ने चुरा लिया । एक की टाँग टूट गयी । अब शिवदास की समझ में आ गया कि बकरियों के व्यापार से कोई लाभ पहुँचने वाला नहीं है तो उसने पचास अशर्फ़ियों में बाकी बक़रियाँ बेच दीं ।

उन पैसों से उसने फूलों की बिक्री का व्यापार शुरू किया । जितने फूल वह ले आया, उनमे से वह कुछ बेच नहीं पाया और कुछ मुरझा गये । एक हफ़्ते के अंदर ही पच्चीस अशर्फ़ियों का नुक़सान हुआ ।

फिर भी शिवदास ने अपनी हार नहीं मानी । जो पच्चीस अशर्फ़ियाँ बची थीं, उनसे उसने मिर्च के पकोड़ों का व्यापार शुरू किया । जब उन्हें बेचने एक दिन जा रहा था, तब अचानक बारिश हुई । सब पकौड़ियाँ भीग गयीं । बाक़ी नुक़सान में बेच दिया । अब उसके पास सिर्फ पाँच अशर्फ़ियाँ बचीं ।

उसने कभी ना घटनेवाली जायदाद कमानी चाही व्यापार करके । लेकिन हुआ, बिलकुल ही विपरीत । जो पैसे अपने थे, वे भी नहीं रहे । शिवदास दुखी होता हुआ घर की तरफ जाने लगा । रास्ते में उसने देखा कि चार वर्ष का एक बालक रोये जा रहा है । बालक से पुछा तो मालूम हुआ कि वह पड़ोस के गाँव के सुँदर का बेटा है । वे सब हाट में आये हुए थे तो वह लड़का अपने माँ–बाप से अलग हो गया ।

शिवदास ने उसे मिठाईं खिलायी और उसे उसका गाँव ले गया । इसपर एक अशर्फ़ी खर्च हो गयी ।

बच्चे के माँ–बाप ने शिवदास को धन्यवाद दिया और कहा "हम बहुत ही ग़रीब हैं । तुम्हारी सहायता का प्रतिफल देने की स्थिति में हम नहीं हैं ।"

उसपर शिवदास चिंतित हुआ बोला "मैं किसी प्रतिफल की आशा में आपके बेटे को यहाँ नहीं लाया ।" फिर वह अपना गाँव लौट पड़ा ।

एक जगह एक पगड़ंड़ी के बग़ल में उसे एक छोटी गठरी दिखायी पड़ी । खोलकर देखा तो उसमें सौ अशर्फ़ियाँ थीं । वह वहाँ बहुत देर तक इस उम्मीद में इंतज़ार करता

चिकित्सा कराओ ।" उसे गठरी देकर लोगों के बीच से वह बाहर चला आया ।

जब वह घने जंगल से होता हुआ घर लौटने लगा तो रास्ते में चिंतामणि नामक एक मुसाफ़िर से उसकी मुलाक़ात हुईं । दोनों बातें करते हुए जब जाने लगे, तब चार चोरों ने उनको रोक लिया ।

चिंतामणि के पास थोड़ा-सा सोना था । चोरों ने शिवदास के कपड़े ढूँढ़े तो उन्हें कुछ नहीं मिला । वे अब चिंतामणि की तरफ़ घूमे । इस बीच चिंतामणि ने बड़े ही नैपुण्य के साथ वह सोना शिवदास की थैली में ड़ाल दिया । इस वजह से चोरों को चिंतामणि के पास भी कुछ नहीं मिला । उन दोनों को गाली देते हुए चोर वहाँ से चले गये ।

जैसै ही चोर गये, चिंतामणि ने शिवदास की थैली से सोना निकाला । उसने कहा " तुम्हारी वजह से ही मैं सोना बचा पाया हूं ।" शिवदास ना करता रहा फिर भी उसने थोड़ा-सा सोना उसे दिया और चला गया ।

शिवदास थोड़ी दूर और आगे गया तो उसने देखा कि अपने गले में रस्सी लटकाकर एक आदमी आत्महत्या करने के प्रयत्न में है । उसे देखते ही शिवदास को दुख हुआ और क्रोध भी ।

वह उस आदमी के पास गया और बोला " क्या हुआ है? छी छी, क्या कर रहे हो तुम? अच्छा होता, अपने ही घर में यह काम करते । इतनी दूर आकर मरने की नौबत ही नहीं आती ।"

रहा कि उसका असली मालिक आयेगा । लेकिन कोईं नहीं आया ।

काफ़ी इंतज़ार के बाद वहाँ से शिवदास निकल पड़ा । थोड़ी दूर आने के बाद उसने देखा कि एक जगह पर लोगों की भीड़ जमी हुईं है । उनके बीच में एक स्त्री रो रही है । पूछने पर पता चला कि उसके पति को सांप ने डसा है । इलाज के लिए वैद्‌य सौ अशर्फ़ियों की मांग कर रहा है । वैद्य को देने के लिए इतना धन उसके पास नहीं, इसलिये वह औरत रो रही है ।

फ़ौरन शिवदास ने सौ अशर्फ़ियाँ उस औरत को देते हुए कहा " देवी, तुम रोओ मत । यह गठरी लो । इसमें सौ अशर्फियाँ हैं । तुरंत जाओ और इनसे अपने पति की

दामोदर उसका नाम है। उसने अपनी लड़की की शादी पर दुल्हेवालों को दहेज देने का वचन दिया था। मुहूर्त के समय पर जब वह दहेज नहीं दे सका तो उन लोगों ने उसे खूब गालियाँ दी। सब के सामने उसकी बेइज्ज़ती की । अपमान से से लज्जित होकर वह आत्महत्या कर रहा है।

"जो दहेज तुम दे नहीं सकते थे, उसे देने का वचन देना तुम्हारी बुध्दिहीनता है। यह सोना लो और अपनी बेटी की शादी कराओ।" कहते हुए शिवदास ने चिंतामणि का दिया हुआ वह सोना उसे दे दिया।

कृतज्ञता से दामोदर की आँखों में आँसू आ गये। उसने कहा " देखने में तुम मुझसे बहुत छोटे हो। मुझ जैसे अनजान आदमी की तुमने बड़ी सहायता की है। मैं तुम्हें आशीर्वाद देता हूँ कि भगवान तुम्हें इतनी संपत्ति दे, जो कभी ना घटे। मेरे साथ आकर मेरी बेटी को आशीर्वाद दो। इनकार ना करना।"

शिवदास उसके साथ गया। शादी के समय एक महाशय उसके पास आया और बोला" तुम रामदास के बेटे हो ना? मेरा नाम नागेश्वर है। चार साल पहले जंगल में चोरों ने मुझे खूब पीटा—मारा। उन चोरों से मै बहुत ही घायल हुआ। मृत्यु के मुँह से बचाकर तुम्हारे पिता ने मुझे मेरे घर पहुँचाया। मेरे प्राण बचाये। अब वे कैसे हैं?"

शिवदास ने बताया कि उसके पिता की मृत्यु हो चुकी है। इसपर नागेश्वर बहुत

दुखी हुआ। वह शिवदास को अपने घर ले गया। उसे नये वस्त्र दिये और कहा "उस समय तुम्हारे पिता की सहायता करने के लिये मेरे पास धन नहीं था। मेरी इस छोटी भेंट को अस्वीकार मत करो" कहते हुए उसने उसे हज़ार अशर्फ़ियाँ दीं।

शिवदास उस धन को लेकर अपने गाँव पहुँचा। गाँव के मुखिया भूषण से वह मिला और हज़ार अशर्फ़ियाँ दिखाते हुए कहा " सौ अशर्फ़ियों को हजार अशर्फ़ियाँ बनायी है मैने। अब कम से कम आप मानते हैं ना कि मैं इतनी संपत्ति कमा सकता हूँ, जो कभी ना घटे।

भूषण ने सिर हिलाते हुए कहा " तुमने तो बताया ही नहीं कि इतना धन कैसे कमा

सके?"

शिवदास ने जो हुआ , सब कुछ सविस्तार सुनाया । सब सुनने के बाद भुषण ने मुस्कुराते हुए कहा "अरे शिव, इतने अनुभव के बाद भी तुम समझ नहीं पाये कि कभी ना घटनेवाली संपत्ति होती क्या है, और उसे कैसे कमाया जा सकता है? यह तो सचमुच अचरज की बात है । तुम बड़े जिद्दी हो । स्वशक्ति पर आधारित होकर तुमने तरह–तरह के व्यापार किये । लेकिन सब में तुम असफल ही रहे । तुम्हें भारी नुक़सान उठाना पड़ा । अब तुम्हारे पास जो हज़ार अशर्फ़ियाँ हैं , वह केवल तुम्हारी अच्छाई व दयालू स्वभाव के कारण प्राप्त हुई हैं ।बताओ तो सही कि इस कमाई में क्या तुम्हारी कोई व्यापार दक्षता है या कोई अपनी शक्ति? सोचो तो सही, तुम्हें ही सच्चाई मालूम होगी" ।

भूषण की बातों से शिवदास को लगा कि विचरते हुए स्वप्नलोक से वह वास्तविक लोक में पहुँच गया । फ़ौरन वह भूषण के पैरों पड़ा और कहा "महाशय, आपने मेरी आँखें खोल दी । कभी ना घटनेवाली संपत्ति के बुरे सपने से आपने मुझे बाहर निकाला ।"

भूषण ने उसे आशीर्वाद देते हुए कहा "शिव, याद रखो, संसार में कोई भी इतनी संपत्ति नहीं कमा सकता, जो कभी ना घटे । वह पर्याप्त धन कमाने का दावा भी नहीं कर सकता । क्योंकि इन दोनों की सीमाएँ असीम हैं ।"

शिवदास ने तब हज़ार अशर्फ़ियाँ भूषण के सामने रखीं और कहा "आप ही कहिए, अब मैं करूँ?"

"तुम चाहो तो मेरे खेतों में काम करो । मेरा साथ दो । अच्छा बेतन दूँगा । तुम्हारी शादी भी कराऊँगा । धन के बारे में मेरी एक बात गाँठ बाँधकर रख लेना । अनावश्यक खर्च ना करना ही कभी ना घटनेवाली संपत्ति होती है ।"

उसके बाद शिवदास सब कामों में भूषण की मदद करता रहा । सब लोग उसे योग्य और विश्वासपात्र कहने लगे । उसने विवाह किया और सुख से अपना जीवन गुज़ारने लगा ।

चंदामामा की ख़बरें

लघु क़ुरान

इस्लाम मज़हब का पवित्र ग्रंथ क़ुरान, अति लघु रूप में स्वीड्न के लांडस्करानो नामक नगर में पाया गया । यह केवल २.७ सें. मी. मोटा है । इसका मूल विषय भी मूल अरबी ज़बान में है । प्राप्तिकर्ता को यह ग्रंथ अपने पिता से प्राप्त हुआ है, जिन्होने इसे १९६०-१९६३ के बीच में

नीलाम में खरीदा था । अब तक समझा जाता था कि चीन में क़ुरान की जो प्रति है, वही सबसे छोटी है ।

स्वीडन में प्राप्त इस ग्रंथ ने गिन्नीस पुस्तक में प्रवेश पाया है ।
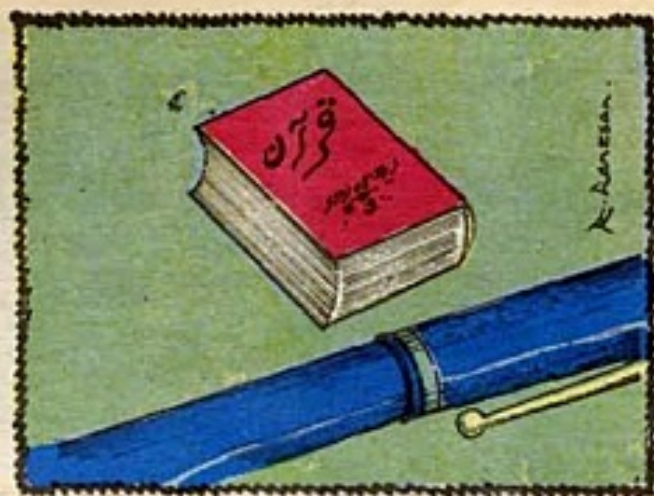
बरफ़ की रेल-गाड़ी

संसार में सब से तेज़ चलनेवाली और सुखद यात्रा के लिए बनायी गयी रेल गाड़ी का नाम है-बरफ़ की रेल-गाड़ी । परंतु हाँ, इसका यह मतलब नहीं कि यह रेल-गाड़ी बरफ़ पर दौड़ती है । यह आकर्षक और चिकनी गाड़ी जर्मनी के शहरों के अंदर दौड़ती है । घंटे में २५० मील की इसकी गति है । 'अमट्राक' नामक एक ग़ैर-सरकारी रैलरोड संस्था बहुत ही शीघ्र ऐसी पच्चीस रेल- गाड़ियाँ खरीदने वाली है । अमेरीका के उत्तर के दक्षिणी क्षेत्रों में १९६४ से ये रेल-गाड़ियाँ दौड़ेंगी ।"

वीडियो पर प्रेत 'पकड़ा गया' ।

प्रेत के स्थिर चित्र लिये गये हैं । परंतु शायद यह प्रथम बार है कि वीडियो पर प्रेत की गति-विधियाँ फिल्मायी गयी हैं । तटवर्ती देश फिज़ी के संसद के सुरक्षा सैनिकों ने बड़ी दृढ़ता और विश्वासपूर्वक कहा है कि उन्होने प्रेत को अंदर घूमते हुए देखा है । उन्होने तुरंत इसका वीडियो लेने का इंतज़ाम किया । तदुपरांत इसका टेप देश के प्रधान मंत्री तथा विपक्ष के नेता को दिखाया गया, जिन्हने इसे टेलिविज़न पर दिखाने की अनुमति दी । इस फिल्म में दिखाया गया है कि प्रेत की छाया एक कमरे में इधर-उधर घूम रही है । वह फिज़ी की पारंपरिक पोशाक पह ने हुए था । प्रेत पेड़ की छाल को अपनी कमर में बांधे हुए है ।

चेचक की मौत

कुछ सालों के पहले तक नवजात शिशु को चेचक का टीका लगवाना अनिवार्य था । इस छूत की बीमारी की वजह से लाखों लोग मर गये । मृतकों में से पचास प्रतिशित लोग बीस साल से कम उम्र के थे । जब से इन जीवाणुओं की रोक-थाम हुई, तब से इसका समूल नाश करने के तीव्र प्रयत्न हुए । पिछले कुछ सालों से इस बीमारी की कोई शिकायत नहीं की गयी । प्रयोग-शालाओं में केवल संशोधन के लिए इन जीवाणुओं के नमूने सुरक्षित रखे गये । दिसंबर ३१ को इस घातक बीमारी के उन जीवाणुओं का भी समूल नाश किया जानेवाला है । विश्व स्वास्थ्य संगठन इस घातक बीमारी से जनता को मुक्त करनेवाला है ।

गंगास्नान का फल

एक गाँव में एक भोला-भाला गृहस्थी ब्राह्मण रहता था। एक दिन उसके हाथों एक पाप हुआ। लोंगों से उसने पूछा कि पाप का प्रायश्चित्त क्या है? उन्होने उससे कहा कि जब तक तुम जीवित हो तब तक तुम गंगा में स्नान करते रहो, सदा भगवान का ध्यान करते रहो। यही तुम्हारे प्रायश्चित्त का मार्ग है।

ब्राह्मण ने अपनी पूरी संपत्ति अपने पुत्र के सुपुर्द की।फिर वह गंगा की खोज में निकल पड़ा। जाते-जाते उसे एक बड़ा जल-प्रवाह दिखायी पड़ा। उसे देखकर उस नासमझ ब्राह्मण ने समझा, यही गंगा है। वह भक्तिपूर्वक उसमें रोज़ नहाता रहा। उसके किनारे बैठकर भगवान की आराधना करता रहा। यों उसने वहाँ पाँच साल बिताये। एक दिन एक शिवभक्त उस रास्ते से गुज़र रहा था। उसने ब्राह्मण से पूछा "पुत्र, यहाँ क्या कर रहे हो?"

ब्राह्मण ने कहा "स्वामी, अनजाने में मुझसे एक बड़ा पाप हो गया है। उससे निवृत्त होने के लिए मैं इस गंगा में स्नान करके भगवान का ध्यान करते हुए प्रायश्चित्त कर रहा हूँ।"

"इस साधारण जल-प्रवाह को गंगा कहते हो?" शिवभक्त ने पूछा।

ब्राह्मण ने सवाल किया "तो क्या यह गंगा नदी नहीं है?" शिवभक्त इसपर ज़ोर से हँस पड़ा और बोला "अरे नासमझ, गंगा और इस जलप्रवाह में आकाश-पाताल का अंतर है। दीमक के ढ़ेर को तुमने मेरु पर्वत समझ रखा है। मैने सपने में भी सोचा नहीं था कि तुम जैसे नासमझ और नादान भी होंगे। जिस गंगा की बात तुम कर रहे हो, वह तो यहाँ से सौ कोसों से भी दूर है।"

"स्वामी, आपने मेरा उपकार किया है।

मेरा भ्रम दूर किया है । आप बड़े ही पुण्यवान हैं" कहते हुए उसने अपना बोरा-बिस्तरा बाँध लिया और वहाँ से चल पड़ा । चलते-चलते रास्ते में उसे एक छोटी-भी नदी दिखायी पड़ी । ब्राह्मण ने सोचा, अवश्य ही यह गंगा होगी । वह बहुत ही प्रसन्न हुआ । उसी नदी में स्नान करते हुए, भगवान का ध्यान करते हुए वहीं और पाँच साल गुज़ारे । एक दिन एक कापालिक उससे मिला । पूरा विवरण जानने के बाद उसने ब्राह्मण से कहा "इस नदी का तो कोई महत्व ही नहीं है । आश्चर्य है कि तुमने यहाँ पाँच साल बिताये । कितने भोले-भोले हो । अगर यह अवधि गंगा के तट पर बिताते तो बहुत ही पुण्य कमाते । तुमसे तो कहा गया है कि गंगा में स्नान करने पर ही तुम्हारे पाप का प्रायश्चित्त होगा । अब भी विलंब नहीं हुआ । तुम शीघ्र गंगा में स्नान करने निकल पड़ो और पुण्य कमावो ।"

ब्राह्मण कापालिक की बातों से चौंक उठा "क्या कह रहे हैं आप स्वामी? तो क्या यह गंगा नदी नहीं है?"

"यह और गंगा । सियार कहीं क्या सिंह बन सकता है? इसमें और गंगा में कोई समानता ही नहीं ।" कापालिक ने कहा ।

"स्वामी, अच्छा हुआ, आपका यहाँ आगमन हुआ । आप मार्गदर्शन नहीं करते तो मालूम नहीं, कितने वर्ष यहीं रह जाता । यह बात बताकर आपने बहुत पुण्य कमाया है" ब्राह्मण ने विनय से कहा ।

फिर से अपना बोरा-बिस्तरा बाँधा और

वहाँ से चल पड़ा । चलते-चलते थोड़े दिनों के बाद नर्मदा नदी के पास पहुँचा । "यह अवश्य ही गंगा है" समझता हुआ उसमें स्नान करने लगा । यों वहाँ वह पाँच साल रहा । एक दिन एक यात्री वहाँ आया । ब्राह्मण जहाँ बैठा था, वहाँ आया और नदी में फूलों को ड़ालते हुए " नर्मदा" नदी का नाम लेकर श्लोक पढ़े जा रहा था ।

ब्राह्मण ने उस यात्री से पूछा "महोदय, इस नदी का क्या नाम है?"

"यह अति पवित्र नर्मदा नदी है । क्या सचमुच तुम नहीं जानते कि यह नर्मदा है?" उस यात्री ने पूछा ।

ब्राह्मण ने लंबी सांस ली और कहा "महाशय. आपने मेरा बड़ा उपकार किया है ।" कहते हुए फिर से अपना बोरा-बिस्तरा बाँधकर वहाँ से निकल पड़ा ।

पर बेचारे ब्राह्मण की पूरी शक्ति अब तक क्षीण हो गयी थी । घर से निकले पंद्रह साल हो गये । उम्र भी बहुत अधिक हो गयी । तपस्या करते-करते शरीर शुष्क हो गया । उसे लगा कि और यात्रा बहुत ही कठिन है । दिन में धूप की तीव्रता उससे सही नहीं जा रही थी । कमज़ोरी की वजह से उसके क़दम आगे बढ़ नहीं पा रहे थे । पर वचनबद्ध होने की वजह से उठते-गिरते वह चलने लगा । स्थिति यहाँ तक पहुँची कि उससे चला नहीं जा रहा था । फिर भी रेंगते हुए उसने यात्रा ज़ारी रखी । जब तक उसकी साँस चलती रही, तब तक हठपूर्वक अपने शरीर से काम चलाता रहा । आख़िर एक पहाड़ी से उसने गंगा नदी देखी । असंख्य यात्रियों को देखा, जो उसमें पुण्य स्नान कर रहे थे । ब्राह्मण का हृदय आनंद से गद्‌गद् हो उठा । वहीं उसकी मृत्यु हो गयी । यमदूत उसे यमराज के पास ले गये ।

यम ने चित्रगुप्त से पूछा "इसके क्या-क्या पाप हैं?"

"इसने एक ही पाप किया है । लेकिन पंद्रह साल गंगा स्नान करता रहा । इसलिए इसके पाप का परिहार हो गया है ।" चित्रगुप्त ने कहा ।

प्रकृति-रूप अनेक

तोते

सुंदर पालतू पक्षियों में से तोते मुख्य हैं । इन्हें बोलना भी सिखाया जाता है । तोतों में तीन सौ सेभी अधिक प्रकार की जातियाँ हैं । इनमें से सत्तर प्रकार की जातियों के तोते शाश्वत रूप से मिट जाने की स्थिति में हैं । 'माकास' नामक तोते सबसे बड़े हैं । ये मध्य अमेरीका तथा दक्षिण अमेरीका में पाये जाते हैं । न्यूगिनिया में पाये जानेवाले 'पेग्मी पारेट्स' सबसे छोटे तोते हैं । साधारणतया तोते हरे होते हैं और नाक लाल होतीहै । मेक्सिको में पाये जानेवाले सिंदूर रंग के तोते ही, (जो चित्र में है) देखने में बहुत ही सुंदर होते हैं । बड़े तोतों की लंबाई करीबन ८५ सें. मी. और छोटे तोतों की लंबाई १० से. मी. होती है । न्यूज़लैंड के 'किया' नामक तोते ही मांस खाते हैं । इनकी नाक टेढ़ी होती है । दो उँगलियाँ आगे और दो उँगलियाँ पीछे होती हैं । पलटे हुए इनके पाँव इन तोतों की विशिष्टता है ।

काँटों की मछली
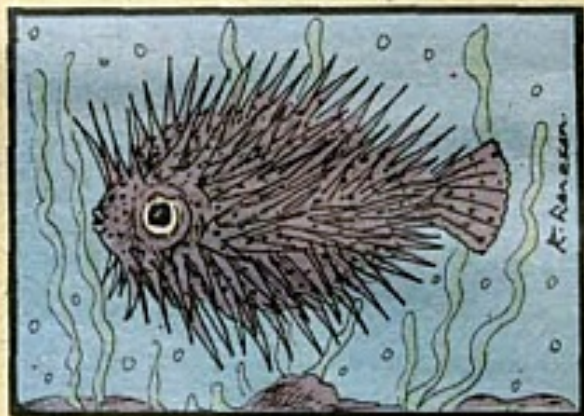
अपनी रक्षा के लिए जंतु विविध प्रकार के मार्गों को अपनाते हैं । उसका ज्वलंत उदाहरण काँटों की मछली । जैसे ही इसे मालूम हो जाता है कि कोई दूसरा जंतु उसे खाने के लिए आगे बढ़ रहा है, वैसे ही यह मछली पेट भर पानी पीती है । अपने शरीर के परिमाण को विस्तृत करती है और गोल गेंद की तरह तैयार हो जाती है । इससे शरीर के ऊपर जो काँटे हैं, वे सीधे हो जाते हैं । उसे जो जंतु खाने के लिए आगे बढ़ता है, वह इन्हें देखकर डर से पीछे भाग जाता है ।

गुलाबों से जपमालाएँ
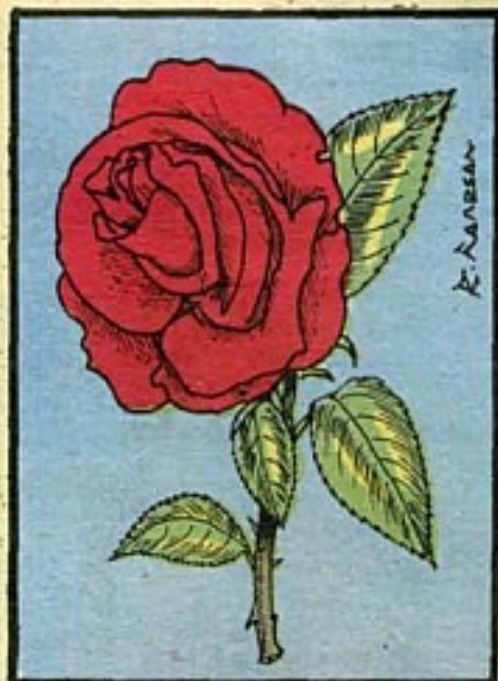
गुलाब फूल को कौन पसंद नहीं करता? सबको विदित है कि जवाहरलाल नेहरू गुलाब फूल बहुत चाहते थे । वे हमेशा एक लाल गुलाब अपने कोट में पहने होते थे । मुग़ल अपनी मातृभूमि पर्शिया से गुलाम के पौधे हमारे देश में ले आये । छठवीं शताब्दी मे 'पर्शिया' गुलाबों की भूमि के नाम से पुकारा और जाना जाता था । वहाँ के गुलाबों के बग़ीचों का 'गुलिस्तान' दुनिया भर में मशहूर है । कहा जाता है कि इन बग़ीचों को पार करने के लिए घोड़ों पर छे दिन सफ़र करना पड़ता था । ई. पू ३,००० संबत् में ही चीन में गुलाब के बग़ीचे मौजूद थे । मैदासु गुलाबों को ग्रीक देश ले गया । गुलाब की पँखुडियों को मसला जाता है । उन्हें सुखाया जाता है । काला रंग उसमें ड़ाला जाता है और फिर उससे जपमालाएँ तैयार की जाती हैं, जिनका उपयोग भक्त-जन करते हैं ।

फोटो परिचयोक्ति प्रतियोगिता :: पुरस्कार १००)

पुरस्कृत परिचयोक्तियाँ फ़रवरी, १९९४ के अंक में प्रकाशित की जाएँगी ।

N. Sambasiva Rao M. Natarajan

★ उपर्युक्त फोटो की सही परिचयोक्तियाँ एक शब्द या छोटे वाक्य में हों । ★१० दिसंबर '९३ तक परिचयोक्तियाँ प्राप्त होनी चाहिए । ★ अत्युत्तम परिचयोक्ति को (दोनों परिचयोक्तियों को मिलाकर) रु. १००-/ का पुरस्कार दिया जाएगा । ★ दोनों परिचयोक्तियाँ केवल कार्ड पर लिखकर इस पते पर भेजें : **चन्दामामा फोटो परिचयोक्ति प्रतियोगिता, मद्रास-२६.**

अक्टोबर १९९३, की प्रतियोगिता के परिणाम

पहला फोटो : **नदी में नावों की क़तार!**

दुसरा फोटो : **अम्बर में बादलों की बहार!!**

प्रेषक : राजेश जैन c/o Sri Keval Chandra Jain, Advocate
Nayapure GUNA P.O. M.P.

Printed by B.V. REDDI at Prasad Process Private Ltd., 188 N.S.K. Salai, Madras 600 026 (India) and Published by B. VISWANATHA REDDI on behalf of CHANDAMAMA PUBLICATIONS, Chandamama Buildings, Vadapalani, Madras 600 026 (India). Controlling Editor: NAGI REDDI.

Bakeman's
uy
o long
every
ther
ffee
Bakeman's
DRUM BEAT
Bakeman's are proud
to announce the luxury
length toffee you've
been longing for; in 3
unbeatable flavours:
Chocolate, Milk
and Coconut.
DRUM BEAT
DRUM BEAT
DRUM BEAT

मिठाई में
नारियल
मुँह में
हलचल
nutrine
COOKIES
बच्चे झूमें-गायें, मौज मनायें
कोकानाका कुकीज
sh/NC/9090/Hin